मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अक्टूबर २००६ ▸ वर्ष ५६ ▸ अंक १०

प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ

चिंतन शिविर : एक अनूठा प्रयोगात्मक कार्यक्रम

४-५ नवम्बर २००६, कोलकाता

- *सम्मेलन को सही मायने में राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था स्थापित करना*
- *२१ वीं शताब्दी में सम्मेलन की प्रासंगिकता बनाये रखना - दिशा एवं कार्यक्रम*

असम

व्यापारियों पर अल्फा के हमले

सम्मेलन द्वारा कड़ा प्रतिवाद

देश के सबसे
धनी मारवाड़ी
लक्ष्मी मित्तल
कुमार मंगलम बिड़ला

लक्ष्मी मित्तल

कुमार मंगलम बिड़ला

आंखों में सपने आकाश के ...
आओ जलायें दीपक विश्वास के

50 - 60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700 001

Ph: 033-2242-2585/4654, 55252587
E-mail : rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR
Sanitation & Plumbing Systems
Agricultural PIPES & FITTINGS
D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'
-मारवाड़ी सम्मेलन

समाज विकास
अक्टूबर, 2006
वर्ष 56, अंक 10
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.

क्रमांक

चिट्ठी आई है, पृष्ठ 4
अध्यक्ष की कलम से, पृष्ठ 5
राष्ट्रीय चिंतन शिविर प्रस्तावित कार्यक्रम, पृष्ठ 6
प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ चिंतन शिविर, पृष्ठ 7
सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम, पृष्ठ -7
71वां सम्मेलन स्थापना विदस समारोह, पृष्ठ 8
सदस्यता शुल्क में बढ़ोतरी, पृष्ठ 8
प्रादेशिक सम्मेलनों के अध्यक्ष, पृष्ठ 9
समाज की अपेक्षायें एवं हमारी जिम्मेवारियां, पृष्ठ 10-11
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में महामंत्री का प्रतिवेदन, पृष्ठ 12
कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति की संयुक्त बैठक-रिपोर्ट, पृष्ठ 13-15
भारत के सबसे धनी, पृष्ठ 18-19
व्यापारियों पर अल्फा के हमले, सम्मेलन द्वारा विरोध, पृष्ठ 16-17
उम्र नफरत की बड़ी या प्यार की, पृष्ठ 20
तोड़ दो मन अहम तोड़ दो, पृष्ठ 21
हां, दिन में भी विवाह हो सकता है, पृष्ठ 22
समाज की स्थिति और प्रगति, पृष्ठ 23
समाज में दानवीरों की कमी नहीं, पृष्ठ 24
भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार, पृष्ठ 25
राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार, पृष्ठ 26
प्रांतीय झांकी, पृष्ठ 27-34

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

संपादक : नंदकिशोर जालान

चिट्ठी आई है

जुलाई 2006 का अंक प्राप्त हुआ। श्रीमती बिमला डोकानिया का लेख 'समाज के लिए मैं क्यों जीऊँ?' एक बेमिशाल लेख है एवं समाज के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने जीवन की संगतियाँ एवं असंगतियाँ दोनों पर ही अपनी विवेचना लिखी है।

समाज विकास द्वारा प्रकाशित ऐसे लेखों से समाज का सुधार एवं विकास होना निश्चित है।

-सत्यनारायण तुलस्यान, मुजफ्फरपुर

समाज विकास में सदस्यता शुल्क में बढ़ोतरी की जानकारी मिली। इस परिवर्तन को तत्काल से लागू कर दिया गया है लेकिन लोगों को, समाज को पहले से जानकारी देना चाहिए था। कोई नियम ऐसा लागू नहीं करना चाहिए था। समाज में हर वर्ग के लोग रहते हैं। आने वाले नये साल तक का मौका देना चाहिए था। 'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया' नारा पढ़ा। अपनी कमजोरी है जो हम केवल नारा में ही रह जाते हैं। हम केवल बोलते हैं, करते नहीं है। मिलनी और दहेज मामले में पैसे वालों के कारण अन्य वर्ग को भी पिसना पड़ रहा है।

-अशोक अग्रवाल, खेतराजपुर

I became very glad to know that you (Sitaram Sharma) have been unanimously elected as the President of All India Marwari Federation. My heartiest congratulations.

-Dr. Shankar Pd. Agrawal, Begusarai

समाज विकास सितम्बर अंक में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का भाषण बहुत ही सुन्दर, हृदयस्पर्शी, सामाजिक चेतना से परिपूर्ण एवं प्रेरक लगा। उनके द्वारा नव समाज के निर्माण का आह्वान बहुत ही सामयिक एवं समाज को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करने वाला है। माननीय अध्यक्ष जी ने समाज के नाम पत्र लिखने की शुरूआत कर एक स्वस्थ परम्परा कायम की है। ''मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'' का प्रस्ताव स्वीकृत होना बहुत ही उत्साहवर्द्धक एवं श्लाघनीय है। पत्रिका में कविताओं की कमी खटकती है। कहानी एवं लघु कथाओं का प्रकाशन भी समय-समय पर पत्रिका में किया जाना चाहिए।

-युगल किशोर चौधरी, चनपटिया, बिहार

समाज में फैली कुरीतियों को हटाने का पूरा प्रयास किया जा रहा है फिर भी जो सफलता मिलनी चाहिए वह कोसों दूर है। आडम्बर और फिजूलखर्ची हमेशा देखने को मिल रहे हैं। सदस्यता शुल्क और आजीवन सदस्यता शुल्क दुगुना कर दिया गया है। पत्रिका के कागज में भी सुधार हो तो अच्छा है। करोड़पति और अरबपतियों के यहाँ तो अशर्फियाँ दी जाने लगी हैं यानि चाँदी के रुपये देने से उनकी प्रतिष्ठा कम हो जाती है।

-परशुराम तोदी 'पारस', सलकिया, हावड़ा

यह जानकर गर्व हुआ कि आपने (सीताराम शर्मा) अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद सम्हाल लिया हैं। निश्चय ही इससे सम्मेलन की गरिमा बढ़ी है। बधाई।

-डॉ. कृष्ण बिहारी सहल, सीकर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने पर बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। आपके नेतृत्व में सम्मेलन मारवाड़ी समाज को सही पथ निर्देश देगा एवं समाज प्रगति करेगा ऐसा हमारा विश्वासहै। ''मिलनी सबकी चार रुपया चाँदी छोड़ कागज का रुपया'' बहुत ही शुभ विचार है। समाज में इसको एक आन्दोलन के रूप में चलाया जाना चाहिए।

-ओमप्रकाश अग्रवाल, सिलीगुड़ी

श्री नन्दकिशोर जी जालान के संपादकत्व में प्रकाशित 'समाज विकास' का जुलाई 2006 का अंक देखा। मुखौटा व सामग्री अच्छी लगी। बधाइयाँ।

पूर्वजों के दूरदर्शी विचार स्तम्भ में पूर्व सभापति के क्रमबद्ध अधिवेशनों में दिये गये भाषणों के अंश मुद्रित हुए हैं। परन्तु विगत अधिवेशनों के पदाधिकारियों की सूची में छपे 1935-38 के प्रथम संस्थापक सभापति स्व. रामदेवजी चोखानी के विचारों का कोई भी अंश कहीं भी देखने को नहीं मिला। सभी को ज्ञात है कि श्री रामदेव जी चोखानी मात्र सम्मेलन के प्रथम सभापति ही नहीं भारत के पूर्वांचल में राजस्थानी का बिगुल बजाने वाले प्रथम सम्मान्य महामानव थे जिन्होंने ही ठाकुर रवीन्द्र नाथ टैगोर को इस भाषा की ओर आकृष्ट किया था। राजस्थान रिसर्च सोसाइटी की स्थापना की एवं सुन्दर ग्रन्थावली जैसे सद्ग्रन्थ दो खंडों में प्रकाशित करवाये जो कि सारे भारत में ऐतिहासिक बन चुके हैं। सम्मेलन ने भी ''राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार'' की स्थापना की है जिसके निर्णायक मंडल में आपका (श्री जालानजी का) नाम सर्वोपरि है। हर्ष हो रहा है।

-हरिचरण चोखानी, कोलकाता

पत्र संख्या 3, दिनांक 1, नवम्बर 2006

राष्ट्रीय अध्यक्ष की आपके नाम चिट्ठी

कार्यक्रमों की प्रगति रपट

भाइयों एवं बहिनों,

मैंने भुवनेश्वर में आयोजित सम्मेलन के 20वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पद भार ग्रहण के पश्चात् दिये गये अध्यक्षीय भाषण में यह घोषणा की थी कि घोषित कार्यक्रमों की प्रगति रपट मांगने का आपको अधिकार होगा। इस संदर्भ में मैंने समाज विकास के माध्यम से आपको प्रत्येक घोषित कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में हुई प्रगति से आपको अवगत कराते रहने का निर्णय लिया है।

मारवाड़ी सम्मेलन भवन उप-समिति का कार्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया की अध्यक्षता में सुचारू रूप से चल रहा है। पिछले दो महीने में इस उप-समिति की चार बैठकें आयोजित की गयी हैं। आर्किटेक्ट की नियुक्ति कर दी गयी है। पहला नक्शा बनकर तैयार हो गया है। सर्वे रपट तैयार हो गयी है। मिट्टी टेस्ट के लिये एजेंसी नियुक्त कर दी गयी है एवं 14 अक्टूबर को हुयी उप-समिति की बैठक में आर्किटेक्ट द्वारा प्रस्तुत प्रारूप प्लान को स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है। यह निर्णय किया गया है कि आगामी एक महीने के भीतर मकान का प्लान स्वीकृति के लिये कोलकाता कारपोरेशन में जमा कर दिया जायेगा।

जब तक यह अंक आपके हाथ में पहुंचेगा तब तक हमारा चिन्तन शिविर 4-5 नवम्बर को कोलकाता में आरम्भ हो जायेगा। प्रान्तों से भागीदारी के समाचार सचमुच प्रोत्साहक हैं। इस अनूठे प्रथम प्रयोग के माध्यम से हम मारवाड़ी सम्मेलन की आगामी दो वर्षों में दिशा एवं कार्यक्रमों का निर्धारण करेंगे।

समाज सुधार के क्षेत्र में हम नवम्बर महीने में ही वैवाहिक सुधारों के लिये विभिन्न जातिगत एवं सामाजिक संगठनों से बातचीत के द्वारा एक ''सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम'' तय करने जा रहे हैं। अगले पत्रों में हमने आपसे वैवाहिक कार्यक्रम के कुछ प्रस्तावों पर आपके सुझाव आमंत्रित किये हैं, आपके विचार हमारे निर्णयों को मजबूती प्रदान करेंगे।

सदस्यता अभियान उप-समिति, जिसके अध्यक्ष सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री आत्माराम सोंथालिया हैं, उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने के पहल आरम्भ कर दी है एवं एक रूपरेखा तैयार की जा रही है। उसी तरह राजनैतिक चेतना उप-समिति का कार्य विद्वान एवं कर्मठ अध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया के सक्षम हाथों में है। मैं पुनः आप सभी पाठकों से निवेदन करना चाहता हूं कि वे अपने क्षेत्र के मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं के नाम-पते सम्मेलन कार्यालय को भेजने की कृपा करे।

मैं आप से एक नयी कार्य योजना के विषय में बात करना चाहता हूं जिसे 14 अक्टूबर की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में मेरे प्रस्ताव पर स्वीकृत किया गया है। सम्मेलन राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर ''उद्यमी विकास कार्यक्रम'' आरम्भ करना चाहता है इसके अन्तर्गत समाज के सफल उद्योगपति युवा-उद्यमियों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। कोलकाता में इसका शुभारम्भ इन्स्टीट्युट आफ इन्सपरेशन एण्ड सेल्फ डेवलेपमेंट के सहयोग से अगले वर्ष के आरम्भ से किये जाने की योजना है। समाज के कई सुप्रसिद्ध उद्योगपतियों ने प्रशिक्षण देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम युवा वर्ग को सम्मेलन से जोड़ सकेंगे। साथ ही अन्य समाज के युवाओं को कार्यक्रम में आमंत्रित कर समरसता के हमारे लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकेंगे। इस कार्यक्रम की एक रूपरेखा तैयार कर शीघ्र ही सभी प्रांतीय सम्मेलनों को भेजी जायेगी जिससे हम इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू कर सकें।

जय सम्मेलन, जय समाज!

आपका

सीताराम शर्मा

(सीताराम शर्मा)

दो दिवसीय राष्ट्रीय चिन्तन शिविर

4-5 नवम्बर 2006

कोलकाता

प्रस्तावित कार्यक्रम

शनिवार, 4 नवम्बर 2006	प्रात: 8.30 बजे	अल्पाहार
	9.30 बजे	पंजीकरण
	10.00 बजे	उद्घाटन सत्र
	11.00 बजे	प्रथम विचार सत्र
		-संगठन
		-सदस्यता
		-नये प्रांतीय सम्मेलन
	13.00 बजे	मध्याह्न - भोज
	14.00 बजे	द्वितीय विचार सत्र
		-समाज सुधार
		-सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम
		-सामाजिक एवं नैतिक मूल्य
	सायं 16.00 बजे	चाय
	16.15 बजे	तृतीय विचार सत्र
		-समरसता
		-साहित्य संस्कृति
		-स्थानीय अनुभव
	19.00 बजे	विश्राम
	20.00 बजे	रात्रि भोज
रविवार, 5 नवम्बर 2006	प्रात: 9.00 बजे	नीति - निर्धारण सत्र
	13.00 बजे	मध्याह्न भोज - स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ।
	14.00 बजे	गोलमेज वार्त्ता
	16.30 बजे	समापन समारोह
	17.00 बजे	विश्राम एवं प्रस्थान

शिविर स्थल

जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन

एबी-47, सेक्टर-1 साल्टलेक सिटी, कोलकाता-700064

फोन : 23594847

चिन्तन शिविर : 4–5 नवम्बर 2006

प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ चिंतन शिविर

अपने ढंग के अनूठे एवं प्रथम प्रयोग के रूप में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सम्मेलन की वर्त्तमान स्थिति एवं कार्यशैली पर विचार करने के लिए एवं भावी दिशा निर्धारित करने के लिए प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ एक चिंतन शिविर का आयोजन आगामी 4–5 नवम्बर 2006 को साल्टलेक, कोलकाता में आयोजित किया है।

इसे शिविर में भाग लेने के लिए प्रांतीय सम्मेलनों के अध्यक्ष, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष को आमंत्रित किया गया है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति के सदस्य इसमें उपस्थित रहेंगे।

शिविर के सम्मुख निम्नलिखित दो मुख्य विचारार्थ विषय होंगे–

(1) सम्मेलन को मारवाड़ी समाज की सही मायने में प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करने के लिए संगठन एवं सदस्यता सम्बन्धी प्रस्ताव।

(2) 21वीं शताब्दी में सम्मेलन की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए उसकी दिशा एवं कार्यक्रम तथा उनकी प्राथमिकताएँ।

प्रांतीय सम्मेलनों से प्राप्त विचारों के आधार पर तैयार ठोस प्रस्ताव शिविर के सम्मुख विचारार्थ रखे जायेंगे।

प्राय: सभी प्रान्तों से पूर्वोत्तर, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु से उपस्थिति के उत्साहजनक समाचार प्राप्त हुए हैं।

इस अवसर पर एक सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक आचार-संहिता निर्धारित करने के लिए जातीय एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों का एक गोलमेज आयोजित किया जा रहा है। इस बैठक में एक दस-सूत्रीय प्रस्ताव प्रस्तुत किया जायेगा।

''सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम''

- मिलनी चाँदी या गिन्नी की बजाय कागज के चार रुपयों की हो।
- विवाह-समारोह में दोनों पक्ष मिलाकर 400 से अधिक मेहमान नहीं हों।
- विवाह निमन्त्रण पत्र साधारण एवं कम खर्च वाले हो।
- प्रीति भोज में 21 व्यंजन से अधिक नहीं परोसे जाये।
- सगाई या विवाह की मिठाई के वितरण का खर्च भार वर पक्ष स्वयं वहन करे, उसका भार वधू पक्ष पर नहीं दिया जाये।
- दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाये।
- क्या तो सजन गोठ बन्द हो या अधिकतम संख्या 30–40 से अधिक नहीं हो।
- नेग एक ही हो – छोटा/बड़ा अलग-अलग नहीं।
- सगाई/तिलक समारोह में प्रीति भोज की जगह केवल अल्पाहार हो।
- विवाह में अधिकतम समारोह दो हो।

आगामी 4–5 नवम्बर 2006 को मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित चिन्तन शिविर में एवं विभिन्न जातिगत एवं सामाजिक संस्थाओं की बैठक में उपरोक्त प्रस्तावों पर विचार-विमर्श कर एक ''सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम'' निर्धारित किया जायेगा। आपकी राय महत्वपूर्ण है।

71वां सम्मेलन स्थापना दिवस समारोह

सोमवार, 25 दिसम्बर 2006

कला मन्दिर सभागार, कोलकाता

इस अवसर पर अपने समाज के परिवार के कलाकारों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने की योजना है।

इच्छुक कलाकार सम्पर्क करें :-

बालकृष्ण दास मुंधड़ा

अध्यक्ष, साहित्य, संस्कृति उपसमिति

फोन – 2252-4125/7900

मो. – 9830063610

राम अवतार पोद्दार

महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

152-बी, महात्मा गांधी रोड,

कोलकाता – 700007

फोन – 22680319, मो. – 9830019281

सदस्यता शुल्क में बढ़ोत्तरी

दिनांक : 11 सितम्बर 2006

प्रिय बंधु,

आप सब मित्रों के सुचिंतित और आर्थिक सहयोग से सम्मेलन पिछले 70 वर्षों से सफलता के साथ सामाजिक सुधार एवं सामाजिक विकास का कार्य करता रहा है। पिछले वर्षों में सभी क्षेत्रों में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है जिसके कारण सम्मेलन की आर्थिक स्थिति में कई प्रकार की रुकावटें पैदा होती रही हैं। यद्यपि प्रायः सभी संस्थाओं ने अपने वार्षिक एवं आजीवन सदस्यता शुल्क में लगभग पांच-छह गुना की वृद्धि कर दी है तथापि सम्मेलन ने यथासाध्य उस रूपक को अब तक नहीं अपनाया था, लेकिन हर क्षेत्र में दिनोंदिन बढ़ते खर्च के कारण सम्मेलन को अब विवश होकर अपना वार्षिक विशिष्ट सदस्यता शुल्क 250/- रुपये की जगह पर 500/- रुपये और आजीवन सदस्य शुल्क 2500/- रुपये की जगह 5000/- रुपये करना पड़ रहा है। इस परिवर्तन को तत्काल से लागू कर दिया गया है।

सम्मेलन द्वारा आने वाले समय में समय की आवश्यकतानुसार कई महत्वपूर्ण कार्य अपनाये जा रहे हैं जिसकी सूचना 'समाज विकास' एवं अन्य माध्यमों से आपको मिलती रहेगी।

आशा है इसे आप भी अनिवार्य समझेंगे और अपना सहयोग हमेशा की तरह निरंतर देकर सम्मेलन की आवश्यकताओं की पूर्ति में अपना योगदान देते रहेंगे।

सधन्यवाद।

आपका

राम अवतार पोद्दार

राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रादेशिक सम्मेलनों के अध्यक्ष

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री रमेश कुमार बंग**

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री विजय कुमार मंगलुनिया**

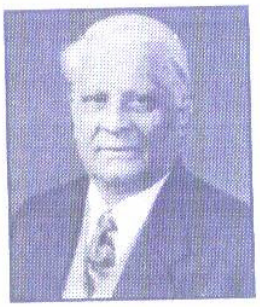

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला**

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री कैलाशमल दुग्गड़**

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया**

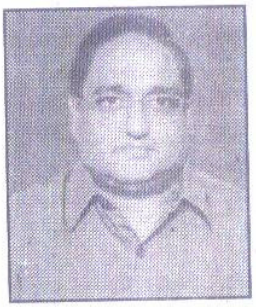

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया**

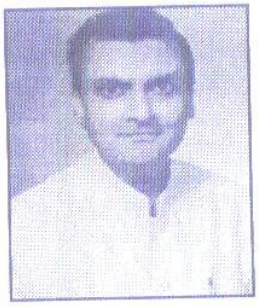

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी**

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री सोमप्रकाश गोयनका**

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री रमेशचन्द्र गोपीकिशन बंग**

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
अध्यक्ष **श्री लोकनाथ डोकानिया**

राष्ट्रीय चिन्तन शिविर

समाज की अपेक्षाएं एवं हमारी जिम्मेवारियां

बंशीलाल बाहेती, सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति, अ. भा. मा. सम्मेलन

संभवत: हमारे सम्मेलन के सात दशक के कार्यकाल में ऐसे चिन्तन शिविर की परिकल्पना पहली बार राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने की है। समाज में व्याप्त निराशा एवं दिशा विहिन स्थिति से उभारने का दायित्व नेतृत्व का तो है ही, परन्तु यह दायित्व उन तमाम प्रबुद्ध बंधुओं का भी है जो इस राष्ट्रीय चिन्तन शिविर में हिस्सा लेने अलग अलग क्षेत्रों से आयेंगे। उनके मन में भी समाज में उभरती हुई चिन्ताओं-हालातों और उनसे उभरने का सोच इस चिन्तन शिविर की सार्थकता का प्रतीक बनेगा।

काल की गति को आसानी से पहचानना संभव नहीं होता- परिस्थितियां कब और किसरूप में बदलती है यह पता लगाना भी उतना ही दुष्कर है। मारवाड़ी समाज अपनी धरती से वर्षों जुड़ा रहा, उसके विकास के सपने संजोना और उसकी शान को शोभित करना उसके स्वभाव में निहित रहा। वह उपार्जन के नए नए स्तोत खोजता रहा और उपार्जित धन का उपयोग अपनी धरती के विकास एवं समाज के कल्याण के लिए करता रहा।

एक के बाद एक जनहित के कार्यों में इस समाज ने जो कीर्तिमान स्थापित किए उससे उसके गौरव को नई ऊंचाइयां मिली, पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी साख को बढ़ाते हुए यह समाज सबके सम्मान का प्रतीक बन गया। उदारता व शालीनता ने इसके संस्कारों में निखार बढ़ा दिया।

परन्तु, परिस्थितियाँ बदली। इस समाज की वृत्ति एवं प्रवृत्ति में भी तेजी से बदलाव आए। निजी हितों की भावना ने सामाजिक हित को पीछे धकेल दिया-आपसी सामंजस्य और सौहार्दता का अभाव बढ़ता गया। प्रदर्शन, दिखावा और ईर्ष्या ने हमारी अस्मिता को झकझोर दिया। हम अपनो के बीच पराए होते जा रहे हैं-यह स्थिति बेहद दु:खद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

परिवारों का तेजी से हो रहा विघटन सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व को संदेहास्पद बना रहा है। पूरे सामाजिक परिवेश में एक भय और घबराहट फैली हुई है। पूरा समाज अपेक्षा कर रहा है कि नेतृत्व उनके विश्वास और व्यवस्था को मजबूती देने में पहल करे।

इन चिन्ताओं के बीच हम अन्य समाजों की तुलना में अपना आधार भी सम्हालने में असफल हो रहे हैं। नई पीढ़ी का अपनों से लगाव तेजी से घट रहा है। हम अस्तित्व की ऐसी लड़ाई में उलझ गए हैं जहां न हम अपनी परम्पराओं की रक्षा कर पा रहे हैं और न सामूहिक रूप से उभरती चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम महसूस कर रहे हैं। विश्वास और भरोसा जो हमारी सामाजिक व्यवस्था का आधार था अब तेजी से हट रहा है। ऐसे वातावरण में इस चिन्तन शिविर का एक ऐतिहासिक महत्व होगा। समाज की हमसे बहुत सारी अपेक्षाएं हैं और यह हमारी जिम्मेवारी है कि हम अपनी सामाजिक व्यवस्था में एक नया भरोसा एवं विश्वास पैदा करें।

इस शिविर में जो विषय प्रस्तावित किए गए हैं उनमें प्रमुख है- संगठन, सदस्यता एवं नए प्रान्तीय सम्मेलनों का वर्चस्व कायम करना और समाज में नई चेतना का संचार करना। दूसरे सत्र में समाज सुधार, न्यूनतम वैवाहिक मर्यादाएं एवं सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को मजबूती देना ताकि हम अपनी पारिवारिक व्यवस्था के बिखराव को रोक सकें और समाज व्यवस्था में नया विश्वास एवं भरोसा पैदा कर सकें। तृतीय सत्र के हमारे विवेचन के प्रमुख मुद्दे हैं-समरसता, साहित्य संस्कृति एवं स्थानीय समाज के साथ हमारी आत्मीयता। सबसे प्रमुख परिचर्चा दूसरे दिन नीति निर्धारण सत्र के समय होगी। इस मंच में तमाम विषयों पर हुई परिचर्चा के आधार पर दिशा निर्देश की रूपरेखा समाज के हित में प्रस्तुत की जाएगी।

इस चिन्तन शिविर में शामिल होने वाले बंधुओं के मन में अन्य मुद्दे भी उभरेंगे एवं कई ऐसे ज्वलंत पक्ष भी उपस्थित हो सकते हैं जिनकी प्राथमिकता को महत्त्व देना हमारे लिए जरूरी होगा, चिन्तन शिविर में शामिल होने वाले सभी बंधुओं को अपनी जिम्मेवारी का अहसास होगा और समग्र समाज के हित में उनकी चिन्ताएं भी स्वभाविक होगी। हमें चिंतन शिविर को बेहद संवेदनाशील और गौरवमय बनाना है। यह मौका आक्षेप एवं उलाहने का नहीं है बल्कि हमारी संकल्प शक्ति को समाज व्यवस्था के लिए प्रेरित करना और सभी को सामूहिक रूप से मजबूती प्रदान करना है।

हम ऐसे वक्त से गुजर रहे हैं जहां पूरे विश्व में अर्थव्यवस्था का नया स्वरूप उभर रहा है। मारवाड़ी समाज की पहचान इस बात से भी कि वह देश की अर्थव्यवस्था की बड़ी मजबूत कड़ी के रूप में वर्षों प्रतिष्ठित रहा। उसके सामने चुनौतियाँ थीं परन्तु स्पर्द्धा इतनी कठिन नहीं थी - आज इस समाज को चुनौतियों और स्पर्द्धा दोनों का मुकाबला करना है। नए सोच के साथ नई शक्ति से इस समाज को बढ़ना होगा। और इस प्रक्रिया में अपने समाज को सशक्त करना भी उसकी प्रमुख जिम्मेवारी रहेगी।

आज बाजारवाद ने हमारे तमाम मूल्यों एवं मान्यताओं को बदल दिया है। बाजारवाद की इस आंधी ने परिवारवाद को झकझोर कर रख दिया है। टूटते-बिखरते इस परिवार व्यवस्था को इस आंधी से बचाना हमारी सबसे बड़ी जरूरत है और इस चिन्तिन शिविर में हमें इस पर भी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से परिचर्चा करनी होगी और बिखरते समाज को बचाने की पहल करनी होगी। अगर समाज का बिखराव हो गया तो हमारे सारे अन्य उपाय बेमानी होकर रह जाएंगे। हमें परिवार

और समाज को बिखराव से बचाने का सूत्र ढूंढ़ना होगा।

बदलते परिवेश में हमें अपनी नई पीढ़ी को भरोसा देने के लिए विशेष प्रकल्प शुरू करने हैं। हमारा केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रांतीय इकाइयां संकल्प करें कि हर वर्ष मारवाड़ी समाज के मेधावी युवक युवतियों को प्रतियोगिता में प्रशिक्षण देने की ईमानदार व्यवस्था की जावेगी। यदि हमारा केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रान्तीय संगठन प्रति वर्ष प्रशासनिक सेवा, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में शामिल हो सके ऐसा प्रशिक्षण देने की व्यवस्था और बड़े व्यावसायिक व औद्योगिक इकाइयों में चयन किये जा सके ऐसी शिक्षण व्यवस्था का हर प्रकार से प्रबन्ध कर सके और प्रतिवर्ष कम से कम 10 ऐसे मेधावी युवक युवतियों को हम इसके योग्य बनाने में अपनी क्षमताओं का कारगर क्रियान्वयन कर पाए तो एक नई विश्वसनीयता हमारे प्रति उभरेगी और संगठन के प्रति समाज की आस्था तेजी से बढ़ेगी। इस प्रकल्प को सफल करने के लिए हम समाज के बड़े और सफल औद्योगिक घरानों से एक-एक युवक युवती को पूर्ण संरक्षण प्रदान करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। जरूरत है हम पहल करें।

हमें चिन्तन करना होगा कि इस स्पर्धा के दौर में हम अपने समाज के आर्थिक आधार को कितनी विश्वसनीयता से मजबूती देने में सहयोगी सिद्ध होते हैं। केन्द्रीय सरकार की नई व्यवस्था के तहत Cluster संस्कृति को प्राथमिकता प्रदान की है इसके तहत समूह में स्थापित होने वाले उद्योगों को एक मुश्त 75% राशि अनुदान के रूप में प्रदान की जाती है। हमारा समाज अपने बंधुओं के लिए इस व्यवस्था का निश्चित लाभ प्राप्त कर सकता है।

बड़े व मध्यम श्रेणी के शहरों में आवास व्यवस्था विकट रूप धारण कर रही है। मध्यम श्रेणी के परिवारों के लिए इन शहरों में आवास व्यवस्था बहुत बड़ी चिन्ता का विषय बना हुआ है। समस्या दिन पर दिन भयावह होगी- हम एतदर्थ सामूहिक प्रयास द्वारा सहकारिता के आधार पर ऐसे आवास बस्तियों की योजनाओं को प्रेरित कर सकते हैं ताकि समाज बंधुओं को भरोसे के साथ इन आवास बस्तियों में अपना घर मिल सके और एक सामूहिक परिवार का स्वरूप उभर सके।

सामाजिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए जरूरी है हम तीज त्योहार एवं विशेष अवसरों को सामूहिक रूप से मनाएँ ऐसा करके हम अपनी सामाजिक व्यवस्था को मर्यादित कर सकते हैं। जयपुर-जोधपुर- कोटा प्रभृति शहरों में होली पर आयोजित समूह भोज में हजारों की संख्या में समाज बंधु शरीक होते हैं और ऐसे अवसरों पर प्रति वर्ष समाज हित के नए प्रकल्पों की रूप रेखा को क्रियान्वित करने की पूरजोर कोशिश की जाती है।

दो दिन के इस चिन्तन शिविर में परिचर्चा के अनेकों प्रश्न उभरेंगे। आपके मन में भी ऐसे अनेकों ज्वलन्त विचार होंगे। आप खुले मन से इस परिचर्चा में भाग लें-अपने विचारों को अभिव्यक्ति दें- संभव है आपके विचारों से पूरा समाज लाभान्वित हो। यह प्रयास होना चाहिए कि परिचर्चा सार्थक हो- अपनी बात कहते समय हम श्रोताओं के अमूल्य योगदान को ध्यान में रखें उन्हें हमारी बात से प्रेरणा मिले और आपके प्रति उनके मन में और अधिक आदर का भाव उभरे। हमारी चर्चा गंभीर व समाज के समग्र हित में हो।

याद रखिए कि ऐसी परिचर्चा संभवत: पहली बार राष्ट्रीय संगठन ने आयोजित की है। इसके दूरगामी परिणाम होंगे- यह हमारी कार्यप्रणाली को नया आधार प्रदान करेगी- हमारे राष्ट्रीय चरित्र और हमारी वर्षों की गरिमामय परम्पराओं के आकलन का यह बड़ा अवसर होगा। आपके सारगर्भित परिसंवाद से हमारे समाज को नई गरिमा और उसकी प्रतिष्ठा को नई शक्ति प्राप्त होगी। संभवत: यह हमारे सात दशक की कार्यशैली में नई स्फूर्ति प्रदान करे- संभवत: हम यह तय कर सकें कि हमारा संगठन महज विचारमंच ही नहीं है बल्कि अपने समाज के हित में सामूहिक प्रकल्पों को क्रियान्वित करने के लिए भी वचनबद्ध है। यह चिन्तन शिविर हमारे सम्मान और सोच को नई ऊंचाईयां प्रदान करेगा।

याद रखिए भामाशाह की परम्पराओं, महाराणा प्रताप के शौर्य, चन्दवरदायी की निष्ठा, मीरा का समर्पण, रैदास की भक्ति और हजारों लाखों हमारे पूर्वजों की गौरवगाथा के वारिशों का चिन्तन उतना ही गंभीर व गौरवमय हो ताकि अन्य समाज भी इससे प्रेरणा प्राप्त करें। तमाम समाज को एक सूत्र में बांधने, अपनों को सम्मान के साथ जोड़ने एवं अपनी अस्मिता को नया आधार देने में यह चिंतन शिविर सार्थक सिद्ध हो यही कामना है। समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने में हम अपनी जिम्मेवारियों को निभा सके इसी संकल्प के साथ हम प्रभावी नीति को स्वरूप प्रदान करे। इस चिंतन शिविर से हमें एक नई पहचान मिले नया उत्साह मिले और आत्मीयता का नया आभास प्राप्त हो इन्हीं सद्भावनाओं के साथ हम चिंतन शिविर में शरीक हों। ●

बर्तन की आवाज

पिता-पुत्र बाहर बैठे थे। अचानक भीतर से किसी बर्तन के गिरने की आवाज आई।

पिता ने पूछा - अरे! क्या गिरा?

पुत्र ने कहा - पिताजी, लगता है कांच का गिलास टूटा है।

पिता ने पूछा - किसके हाथ से?

पुत्र ने कहा - मां के हाथ से गिरा है।

पिताजी ने डांटते हुए कहा - शर्म नहीं आती तुम्हें? सीधा मां का नाम लेता है। बहू के हाथ से नहीं गिर सकता क्या?

पुत्र ने कहा - पिताजी! मुझे ऐसा नहीं लगता है। पिता को विश्वास नहीं हुआ। भीतर गये ताकि असलियत जान सकें। मालूम पड़ा गिलास सेठानी के हाथ से ही गिरा है। पिता को आश्चर्य हुआ कि पुत्र ने बिना देखे कैसे जाना? उन्होंने पुत्र से इसका कारण पूछा।

पुत्र ने कहा - पिताजी, गिलास गिरने के बाद कोई दूसरी आवाज नहीं आई। यदि यह गिलास बहू के हाथ से गिरा होता तो उसके पीछे मां की आवाज जरूर आती। बर्तन की आवाज तो तुरंत बंद हो जाती, पर मां की आवाज जल्द बंद नहीं होती।

-राजकुमार थरड़

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक (14. 10.2006) में

राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार का प्रतिवेदन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की द्वितीय एवं स्थायी समिति की प्रथम बैठक के अवसर पर आप सभी का हार्दिक स्वागत है।

गत 5 सितम्बर को कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में आपलोगों ने जिस उत्साह के साथ अपनी भागीदारी निभायी उसने हमारी संकल्प शक्ति को और भी मजबूती प्रदान की है और निश्चित रूप से ये हमें सम्मेलन एवं समाज के विकास की दिशा में उठाये गए हमारे कदमों को बल प्रदान करेंगे।

उप समितियों का गठन

गत बैठक के उपरान्त सम्मेलन के विभिन्न उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों के सफल एवं सुचारू रूप से क्रियान्वयन के लिए 11 उप-समितियों का गठन किया गया है जिनमें हैं (1) कार्यक्रम (2) समाज सुधार, (3) सम्मेलन भवन, (4) समाज विकास, (5) राजनैतिक चेतना, (6) अर्थ, (7) उच्च शिक्षा न्यास, (8) सदस्यता अभियान, (9) प्रेस एवं जन सम्पर्क, (10) साहित्य-संस्कृति एवं (11) युवा महिला उप-समिति। इन उप-समितियों के अध्यक्षों को मनोनयन पत्र भेजे जा रहे हैं।

सम्मेलन भवन नव निर्माण

गत बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार सम्मेलन भवन के नव-निर्माण की दिशा में हम तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। इस विषय में दो बैठकें भी आयोजित हुई हैं। जिसमें लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णयों के आधार पर कार्य को आगे बढ़ाया गया जिसका विस्तृत विवरण राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शर्मा जी एवं कोषाध्यक्ष जो भवन समिति के अध्यक्ष भी हैं, श्री कानोड़िया जी प्रस्तुत करेंगे।

चिन्तन शिविर

सम्मेलन के भावी सांगठनिक एवं कार्यक्रमों की दिशा पर विचार विमर्श हेतु प्रांतीय सम्मेलनों के अध्यक्ष मंत्री एवं कोषाध्यक्षों का राष्ट्रीय चिन्तन शिविर आगामी 4-5 नवम्बर 2006 को कोलकाता में आयोजित किया जाएगा। इस शिविर में आप सभी आमंत्रित हैं। इस हेतु आवश्यक सूचना शीघ्र ही आप सबको प्रेषित की जाएगी।

स्थापना दिवस समारोह

सम्मेलन का 71वाँ स्थापना दिवस समारोह 25 दिसम्बर की सुबह मनाया जाएगा। कार्यक्रम हेतु कला मन्दिर को बुक कर लिया गया है। कार्यक्रम में अपने समाज के परिवार के कलाकारों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने की योजना है। इसकी सूचना भी समाज विकास के गत अंक में दी गयी थी। इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा स्थापित पुरस्कार - 'राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार' तथा 'भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरकार' भी प्रदान किए जाएंगे।

इन पुरस्कारों हेतु कुछेक नामों का प्रस्ताव आया है। शीघ्र ही इनके निर्णायक मंडल की बैठक बुलाकर उन पर निर्णय लिया जाएगा।

कार्यकारिणी समिति

इस समिति में 'स्थायी विशेष आमंत्रित' के रूप में 4 व्यक्तियों को शामिल किया गया है, वे हैं :-

1. श्री दिलीप गाँधी (महाराष्ट्र) 2. पूर्व राष्ट्रीय उप सभापति डा. जयप्रकाश मूंधड़ा (महाराष्ट्र), 3. श्री चिरंजीलाल अग्रवाल (कोलकाता) एवं 4. श्रीनारायण प्रसाद माधोगरिया (कोलकाता)।

अखिल भारतीय समिति

अखिल भारतीय समिति के गठन हेतु सभी प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्रियों को समिति की सदस्यता हेतु नाम मनोनीत कर केन्द्रीय कार्यालय में 10 नवम्बर 2006 तक भेजने का अनुरोध किया गया है। ●

सभी प्रादेशिक अध्यक्षों के ध्यानार्थ

अखिल भारतीय समिति के गठन हेतु

अखिल भारतीय समिति की सदस्यता के लिए प्रादेशिक सम्मेलनों द्वारा सम्मेलन के संविधान की धारा (9)(5)(क) के अनुसार मनोनीत नामों की सूची भेजने की अन्तिम तिथि **10 अक्टूबर 2006** से बढ़ाकर **10 नवम्बर 2006** की गयी है। विदित हो कि यह मनोनयन अधिवेशन से एक महीने पूर्व अर्थात् 4 जुलाई 2006 तक आपके प्रदेश में जितने सदस्य थे उन पर आधारित होना चाहिए।

मनोनीत नामों की सूची उनके पता, टेलीफोन, फैक्स नम्बर, ई-मेल आदि से पूर्ण तथा प्रादेशिक अध्यक्ष अथवा प्रादेशिक महामंत्री द्वारा हस्ताक्षरित कर सम्मेलन कार्यालय को 10 नवम्बर 2006 तक भिजवाने का अनुरोध है।

राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

-मारवाड़ी सम्मेलन

14 अक्टूबर 2006

राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति की संयुक्त बैठक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं स्थायी समिति की संयुक्त बैठक दिनांक 14 अक्टूबर 2006 को सायं 4 बजे मारवाड़ी सम्मेलन भवन, कोलकाता में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा ने की।

सदस्यों ने गत कार्यकारिणी बैठक (5 सितम्बर 2006) का कार्यवृत समय पर प्रेषित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया। महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार ने गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा अपनी बात रखते हुये। बाएं उपस्थित हैं महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार एवं संयुक्त मंत्री श्री अरुण गुप्ता।

अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने घोषित कार्यक्रमों को लागू करने की दिशा में उठाये गए कार्यों का विस्तृत उल्लेख करते हुए कहा कि सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में आवश्यक मरम्मत का कार्य शीघ्र करवा कर वहां के लिए एक और कम्प्यूटर, फैक्स, मशीन, जेरॉक्स, प्रिन्टर, स्कैनर की व्यवस्था की जा रही है। श्री शर्मा ने सम्मेलन कार्यालय को फैक्स, प्रिन्टर एवं स्कैनर के अनुदान के लिए कोलकाता के श्री विवेक पोद्दार को तथा सम्मेलन के सभी पत्रों को नि:शुल्क कोरियर करने के लिए श्याम एयर सर्विस के मालिक श्री अरविंद बियाणी के प्रति आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

उससमितियों का गठन : श्री शर्मा ने ग्यारह उप-समितियों के गठित किये जाने की जानकारी दी तथा उनके अध्यक्ष के नामों से सदस्यों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि ये उपसमितियाँ स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके इसका पूरा अधिकार इसके संबंधित अध्यक्षों को दिया गया है।

भवन निर्माण : भवन निर्माण विकास सम्बन्धित रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के प्रबन्धक ट्रस्टी श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि 2000 वर्गफुट क्षेत्र पर बेसमेंट के अतिरिक्त 4 तल्ला निर्माण हेतु कार्पोरेशन से अनुमति के लिए एक नक्शा तैयार कर लिया गया है। उन्होंने जनवरी 2007 तक नक्शा पास हो जाने की आशा व्यक्त की। श्री सुनील मनीरामका को आर्किटेक्ट नियुक्त किया गया है।

बिहार से कलकत्ता आकर बसे सिविल इन्जीनियर श्री कृष्ण कुमार डोकानिया द्वारा सम्मेलन भवन निर्माण सम्बन्धित समस्त कार्यों में अपनी नि:शुल्क सेवाएं देने की उनकी भावनाओं का स्वागत श्री कानोड़िया ने किया।

राष्ट्रीय चिन्तन शिविर : 4-5 नवम्बर 2006 को कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय चिन्तन शिविर को आत्म विश्लेषण का एक अनूठा कार्यक्रम बताते हुए श्री शर्मा ने बताया कि शिविर में सभी प्रान्तीय सम्मेलन के अध्यक्षों सहित अन्य वरिष्ठ प्रान्तीय पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया है जो राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श कर सम्मेलनों के आगामी दो वर्षों के कार्यक्रम के लिए संगठन, समाज सुधार एवं समरसता विषयक एक सर्वमान्य न्यूनतम कार्यक्रम निर्धारित करेंगे।

सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग

श्री शर्मा ने बताया कि वैवाहिक समाज सुधार के संदर्भ में एक सर्वमान्य न्यूनतम कार्यक्रम निर्धारित करने हेतु कोलकाता की विभिन्न सामाजिक एवं जातिय संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ एक गोलमेज विचार-विमर्श बैठक का आयोजन चिन्तन-शिविर के

दाहिने से राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, संयुक्त मंत्री श्री रवि लडिया एवं श्री श्यामलाल डोकानिया।

दौरान रविवार 5 नवम्बर 2006 को रखा गया है जिसमें निम्नलिखित 10 सुझावों के आधार पर एक सर्वमान्य कार्यक्रम तैयार करने का प्रयास किया जायेगा।

(1) साहजी/सगी दोनों मिलनी चाँदी या गिन्नी की बजाय कागज के चार रुपये के रूप में हो।

(2) विवाह में दोनों पक्ष मिलाकर 400 से अधिक की उपस्थिति नहीं हो।

(3) कम खर्च वाले साधारण निमन्त्रण पत्र छपने चाहिए।

(4) अधिकतम 25 व्यंजन का नियम हर विवाह स्थल पर लागू हो।

(5) सगाई या विवाह की मिठाई यदि वितरित की जाती हो तो उसका खर्च वर पक्ष स्वयं वहन करें, वधू पक्ष पर भार नहीं हो।

(6) सजन गोठ या तो बंद हो या उसकी अधिकतम संख्या 30 हो।

(7) नेग एक ही हो। छोटा/बड़ा अलग-अलग नहीं।

(8) रात्रि के विवाह के बनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाये।

(9) तिलक समारोह में भोज की जगह अल्पाहार की व्यवस्था हो।

(10) विवाह में अधिकतर समारोह दो हो।

श्री शर्मा ने शिविर के लिये साल्टलेक स्थित स्व. जयराम गुप्ता भवन निःशुल्क उपलब्ध कराने हेतु श्री राधेश्याम गुप्ता एवं श्री बाबूलाल धनानिया के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया तथा श्री बाबूलाल धनानिया द्वारा शिविर में एक समय के भोजन का खर्च लगभग 10 हजार रुपये वहन करने एवं श्री सुबीर पोद्दार द्वारा 5 नवम्बर को अपने निवास पर रात्रिभोज की व्यवस्था किये जाने की घोषणा की गयी जिसका करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

श्री बाबूलाल धनानिया ने वैवाहिक समाज सुधार के नारों को शादी-विवाह स्थलों एवं धर्मशालाओं में लगाने का सुझाव दिया।

बाएं से श्री नवल जोशी, श्री नारायण प्रसाद माधोगडिया, श्री कृष्ण कुमार डोकानिया, श्री ओमप्रकाश पोद्दार एवं श्री सांवरमल भीमसरिया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गणेश प्रसाद कन्दोई ने जिन प्रान्तों में सम्मेलन नहीं है वहां से कोई नाम प्राप्त होने पर उन्हें भी चिन्तन शिविर में

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

आमंत्रित करने का सुझाव दिया।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री दीपचन्द नाहटा ने जैन समाज में वैवाहिक भोज में व्यंजन की संख्या 14 तक ही सीमित बताया।

पं. बंगाल के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने चिन्तन शिविर स्थल को सुन्दर एवं सुविधापूर्ण बताते हुए अधिक से अधिक लोगों को शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरित करने का सुझाव दिया।

स्थापना दिवस समारोह : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का 71वां स्थापना दिवस समारोह 25 दिसम्बर 2006 को प्रातः कला मन्दिर में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में अपने समाज के परिवार के कलाकारों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इसकी सूचना समाज विकास के गत अंक में दी गयी थी। इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा स्थापित पुरस्कार "राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार" तथा "भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार" भी प्रदान किये जायेंगे। इन पुरस्कारों हेतु कुछेक नामों का प्रस्ताव आया है। शीघ्र ही इनके निर्णायक मण्डल की बैठक बुलाकर उन पर निर्णय किया जायेगा।

राजनैतिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय सम्मेलन : तीन दिवसीय राजनैतिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय सम्मेलन अप्रैल-2007 में दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इसमें सभी प्रान्तों से मारवाड़ी समाज के वर्तमान एवं भूतपूर्व सांसद, विधायक एवं पार्षद तथा मान्यताप्राप्त राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों के साथ बैठकें की जायेगी जिसमें मारवाड़ी समाज में राजनैतिक चेतना पर विचार-विमर्श किये जायेंगे।

दाहिने से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गणेश कन्दोई, श्री नवल जोशी, श्री बाबूलाल धनानिया, श्री बालकृष्ण माहेश्वरी, श्री दीपचंद नाहटा, श्री ओम लड़िया एवं श्री जगदीश मूंधड़ा।

बंगला भाषा पुरस्कार : श्री शर्मा ने बताया कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने विभिन्न प्रान्तों में बढ़ती क्षेत्रीयता एवं जातीयता की भावना से चिंतित होकर विभिन्न समुदायों के बीच साहित्यिक सम्बन्धों के माध्यम से संस्कृति सेतु का निर्माण करने एवं समरसता

दाहिने से श्री आत्माराम सोंथालिया, श्री लोकनाथ डोकानिया, श्री बंशीलाल बाहेती एवं श्री विश्वनाथ मुदालकर।

स्थापित करने के लिए बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार की स्थापना 1998 में की थी। पश्चिम बंगाल सरकार की पश्चिम बंग बंगला अकादमी के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। पिछली बार यह कार्यक्रम 12 फरवरी 2005 को किया गया था। इस बार आयोजित पंचम मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार की घोषणा शीघ्र ही की जायेगी। इसी आधार पर अन्य प्रांतों में भी कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव श्री शर्मा ने दिया।

इंस्टीट्यूट ऑफ इन्सपिरेशन एण्ड सेल्फ डेवलपमेन्ट: श्री शर्मा ने बताया कि श्री हरिप्रसाद कानोड़िया द्वारा संचालित उक्त संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ संयुक्त रूप से मारवाड़ी समाज के युवाओं को जोड़ने के लिए उद्यमता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। जिसमें समाज के युवा व्यक्ति या युवा व्यवसायी जो उद्यम के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें प्रशिक्षण दिया जायेगा। उनके मेधा एवं ज्ञान का विकास ही हमारा लक्ष्य होगा। देश के सफल उद्योगपतियों द्वारा महीना में एक या दो दिन अलग-अलग कक्षाएं लेकर उन्हें प्रशिक्षित किया जायेगा। श्री शर्मा ने बताया कि उक्त कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा एक फोल्डर के रूप में शीघ्र ही सम्मेलन के सभी प्रान्तों को भेजी जायेगी।

स्थायी समिति : सम्मेलन की राष्ट्रीय स्थायी समिति की गत बैठक 17.12.05 की रपट प्रस्तुत की गयी जो कि सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई। ●

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

व्यापारियों पर अल्फा के हमले
मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा चिंता एवं विरोध व्यक्त

ऊपरी असम के व्यापारियों पर केन्द्र एवं अल्फा के बीच शांति-वार्ता टूटने के बाद अल्फा के हमलों में तेजी आ गयी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, जो बराबर पूर्वोत्तर प्रादेशिक सम्मेलन के सम्पर्क में है, ने व्यापारियों पर हमले की निंदा की है एवं असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई से तत्काल आवश्यक कदम उठाने की अपील की।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस महासचिव श्री अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुश्री गिरिजा व्यास से मुलाकात की एवं सभी नेताओं ने उनकी उपस्थिति में असम के मुख्यमंत्री से फोन पर बात कर मारवाड़ी व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया।

व्यापरियोंपरअल्फा हमलेकीनिन्दा

कोलाकाता, 25 अक्टूबर। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, जो बराबर पूर्वोत्तर प्रादेशिक सम्मेलन के सम्पर्क में है, ने व्यापारियों पर हमले की निन्दा की है एवं असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई से तत्काल आवश्यक कदम उठाने की अपील की है। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस महासचिव श्री अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुश्री गिरिजा व्यास से मुलाकात की एवं सभी नेताओं ने उनकी उपस्थिति में असम के मुख्यमंत्री से फोन पर बात कर मारवाड़ी व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया। यह जानकारी सम्मेलन के महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने दी। पिछले सप्ताह धेमाजी में घनश्याम जालू एवं तिनअली के किराना व्यापारी ओमप्रकाश अग्रवाल की दिन-दिहाड़े दुकान पर गोली मारकर हत्यायें की गयी थी। पता चला है कि ऊपरी असम के अधिकांश व्यापारियों से अल्फा ने धन की मां की है। हत्याओं के विरोध में 12 घंटे का बंद रखा गया एवं मौन जुलूस निकाला गया।

मारवाड़ी सम्मेलन ने व्यापारियों पर हमले पर चिंता जताई

कोलकाता, 25 अक्टूबर (वि)। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने असम के ऊपरी हिस्सों मे अल्फा के बढ़ते हमले की निंदा की है। सम्मेलन ने मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से इस मामले पर तत्काल आवश्यक कदम उठाने की अपील की है। सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केंद्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस महासचिव अशोक गहलोत, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुश्री गिरिजा व्यास से मुलाकात कर एवं सभी नेताओं ने उनकी उपस्थिति में असम के मुख्यमंत्री से फोन पर बात कर व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया। यह जानकारी सम्मेलन के महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने दी।

असम में व्यापारियों पर उल्फा के हमलों की निंदा

कोलकाता, २५ अक्टूबर (जनसत्ता)। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने केंद्र व उल्फा के बीच शांति वार्ता टूटने के बाद असम के व्यापारियों पर उल्फा के हमलों की निंदा की है। संगठन ने इस संबंध में असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से तत्काल कदम उठाने की अपील की है। यह जानकारी आज एक प्रेस विज्ञप्ति में संगठन के महासचिव रामअवतार पोद्दार ने दी। उन्होंने बताया कि असम के व्यापारियों पर उल्फा के हमलों के मुद्दों पर संगठन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केंद्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस के महासचिव अशोक गहलोत, पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास से मुलाकात कर मारवाड़ी व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया।

व्यापारियों पर अल्फा के हमले से चिंता

कोलकाता : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने उत्तरी असम के व्यापारियों पर हमले की निंदा की है एवं मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से तत्काल आवश्यक कदम उठाने की अपील की है। सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केंद्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस महासचिव अशोक गहलोत, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुश्री गिरिजा व्यास से मुलाकात की एवं सभी नेताओं ने उनकी उपस्थिति में असम के मुख्यमंत्री से फोन पर बात कर मारवाड़ी व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया। जानकारी सम्मेलन के महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने दी।

व्यापारियों पर अल्फा के हमले पर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा चिंता एवं विरोध

कोलकाता, २६ अक्टूबर (नि.प्र.)। ऊपरी असम के व्यापारियों पर केन्द्र एवं अल्फा के बीच शांति-वार्ता टूटने के बाद अल्फा के हमले में तेजी आ गयी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, जो बराबर पूर्वोत्तर प्रादेशिक सम्मेलन के सम्पर्क में है, ने व्यापारियों पर हमले की निंदा की है एवं असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से तत्काल आवश्यक कदम उठाने की अपील की है। सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने दिल्ली में पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा, कांग्रेस महासचिव अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री गिरिजा व्यास से मुलाकात की एवं सभी नेताओं ने उनकी उपस्थिति में असम के मुख्यमंत्री से फोन पर बात कर मारवाड़ी व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने का अनुरोध किया। यह जानकारी सम्मेलन के महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने दी। पिछले सप्ताह धेमाजी में घनश्याम जालू एवं तिनआली के किराना व्यापारी ओमप्रकाश अग्रवाल की दिन-दहाड़े दुकान पर गोली मारकर हत्याएं की गयी थी। वहां व्यापारियों से रंगदारी भी मांगी जा रही है। इस तरह व्यापारियों का वहां काम कर पाना कठिन हो रहा है। सम्मेलन ने केन्द्र तथा राज्य सरकार से तुरंत कदम उठाने का आग्रह किया।

असम की काया में बसती है राजस्थान की आत्मा-राज्यपाल अजय सिंह

राजस्थान और असम का जन्म-जन्मान्तर का रिश्ता है। मैं जब पहली बार सेना के अधिकारी के रूप में यहाँ आया था, तब मुझे पता चला कि असम में भी राजस्थान बसा है। राजस्थान और असम वैसे ही हैं जैसे शरीर में हृदय बसता है। आठगाँव स्थित माहेश्वरी भवन में आयोजित पार्श्व पद्मावती महापूजन का शुभारंभ करते हुए असम के राज्यपाल ले.ज. (से.नि.) अजय सिंह ने यह उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि राजस्थान की शक्ति, असम का सौंदर्य तथा माताजी की श्रद्धाभक्ति का मेल इस राज्य को निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर करता रहेगा।

असम में मारवाड़ियों के योगदान का जिक्र करते हुए श्री सिंह ने कहा कि असम में राजस्थान के लोगों ने जो अवदान दिया है, उतना किसी अन्य प्रदेश के लोगों ने नहीं दिया है।

ऊपरी असम घटना
पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन सजग

पिछले सप्ताह धेमाजी में घनश्याम जाजू एवं तिनअली के किराना व्यापारी ओमप्रकाश अग्रवाल की दिनदहाड़े दुकान पर गोली मार कर हत्यायें की गयी है। पता चला है ऊपरी असम के अधिकांश व्यापारियों से अल्फा ने धन की मांग की है। हत्याओं के विरुद्ध में 12 घंटे का बन्द रखा गया एवं मौन जुलूस निकाला गया है।

केन्द्रीय सरकार द्वारा अल्फा के खिलाफ राज्य में सैन्य अभियान स्थगित कर उसे फिर से जीवनदान दे दिया गया है एवं पिछले दिनों में एक सौ करोड़ से ज्यादा रुपयों की असम के चाय बगानों से उगाही हुई है।

अल्फा ने मोरान के अधिकांश व्यापारियों से धन की मांग की है। ऊपरी असम के व्यवसायी सदा से ही विद्रोहियों के निशाने पर रहे हैं। इस बार छोटे-छोटे व्यापारियों एवं दुकानदारों को भी नहीं बख्शा जा रहा है। सिर्फ व्यापारी वर्ग ही नहीं आम जनता के बीच दहशत का भाव फैल रहा है। ऊपरी असम में प्रतिदिन अल्फा के विद्रोही सुरक्षा बलों पर हमला कर रहे हैं।

24 सितम्बर को केन्द्र ने अल्फा के खिलाफ संघर्ष-विराम समाप्त करने की घोषणा की थी। इसके बाद सेना ने अपना अभियान शुरू कर दिया। कहा जाता है कि अल्फा अब विस्फोटक पदार्थों को ढोने के लिए कॉलेज के छात्रों का उपयोग कर रहा है।

RAM NIWAS MIRDHA
Former Member of Parliament

D-39, Anand Niketan
New Delhi-110 021
Ph. No. 2411 6375/76

October 16, 2006

Dear Shri Tarun Gogoiji,

This has reference to my telephonic discussion with you this morning about kidnapping of a couple of businessman by Ulfa elements in Upper Assam's Sibsagar District during last 2 days. The incidents have created panic among Marwari business community in Upper Assam.

I found you were aware of cases and assured all possible measures and steps in this regard. I assure you that the Marwari community will fully cooperate and support measured taken by your government to maintain peace and security in the state. I have advised Shri Sitaram Sharma, President of All India Marwari Federation, Kolkata that cases of extortion threats should be immediately reported to the local police and administrative authorities.

I have also advised them to keep in touch with your office and not to panic.

Thanking you,

Yours sincerely,

(Ram Niwas Mirdha)

Shri Tarun Gogoi
Chief Minister of Assam
Guwahati-781 006

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री विजय कुमार मंगलूनिया एवं महामंत्री श्री बजरंगलाल नाहटा ने घटना की तीव्र निन्दा करते हुए गम्भीर चिन्ता व्यक्त की।

स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया ने तुरन्त आवश्यक कार्यवाही की एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को बराबर स्थिति की जानकारी फोन पर देते रहे। श्री मंगलूनिया के अनुरोध पर श्री शर्मा ने दिल्ली में राजनैतिक नेताओं से सम्पर्क किया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन स्थिति के बारे में पूरी तरह सजग है एवं स्थानीय स्तर पर हर सम्भव प्रयास कर रहा है। ●

प्रथम दस में 2 मारवाड़ी : पहले स्थान पर लक्ष्मी मित्तल, सातवें पर कुमार बिड़ला

देश के 40 सबसे धनी व्यक्तियों की सूची इस वर्ष कुछ खास है क्योंकि इसमें सिर्फ उनको शामिल किया गया है जिनका 'नेट वर्थ' कम से कम 590 मिलियन डालर है, जबकि गत वर्ष यह रकम 305 मि० डालर थी। इसके बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में इन अरबपतियों की संख्या दुगुनी से भी अधिक 13 से बढ़कर 27 तक पहुंच गयी है। देश की खुली अर्थ व्यवस्था के चलते अरबपतियों-खरबपतियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

देश के सबसे धनी व्यक्ति के रूप में मारवाड़ी समाज के 55 वर्षीय लक्ष्मी मित्तल है जो भारतीय है लेकिन उनका व्यवसाय एवं केन्द्रीय कार्यालय मुख्यतया विदेशों में है। 'स्टील किंग' के नाम से प्रसिद्ध श्री मित्तल की नेट वर्थ इस वर्ष 20 बिलियन डालर आंकी गयी है। दुनिया के अमीरों में मित्तल चौथे स्थान पर हैं। माइक्रोसाफ्ट के बिल गेट्स 50 बिलियन डालर के साथ पहले स्थान पर हैं। एक बिलियन डालर करीब 450 करोड़ रुपयों के बराबर है।

देश के सबसे धनी व्यक्तियों की सूची में अन्य मारवाड़ी सातवें स्थान पर है बिड़ला परिवार के सबसे चमकते सितारे चौथी पीढ़ी के कुमार मंगलम बिड़ला जिनकी नेट वर्थ 4.40 बिलियन डालर आंकी गयी है।

लक्ष्मी मित्तल (55)

कुमार मंगलम बिड़ला (38)

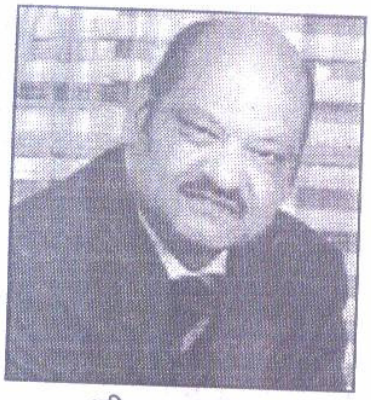

अनिल अग्रवाल (52)

शशि एवं रवि रुईया

इन्दू जैन

वेणुगोपाल धूत (52)

भारत के सबसे धनी...

पहले दस में अन्य हैं (2) अजीम प्रेमजी (11 बि० डा०), (3) मुकेश अम्बानी (7 बि० डा०), (4) अनिल अम्बानी (5.50 बि. डा.), (5) कुशल पाल सिंह-डी एल एफ (5 बि. डा.), (6) सुनील मित्तल (4.90 बि. डा.)।

इस 40 धनियों की सूची में अन्य उल्लेखनीय मारवाड़ी हैं—12वें स्थान पर शशि एवं रवि रूइयां (2.70) 14वें अनिल अग्रवाल (2.10) 17वीं इन्दु जैन (1.70) 18वें वेणुगोपाल धूत (1.60) 20वें राहुल बजाज (1.50) 21वें जिन्दल परिवार (1.40) 29वें सुभाष चन्द्रा (0.90) 37वें नरेन्द्र पटनी (0.65) 39 वें जयप्रकाश गौड़ (0.60) और 40वें नरोत्तम सेकसरिया (0.59) हैं।

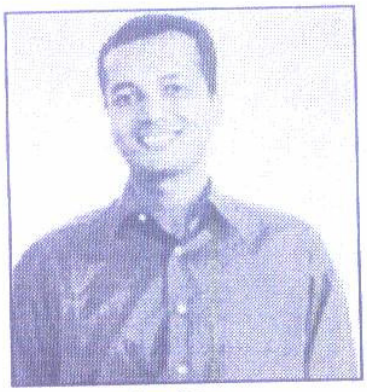

नवीन जिंदल

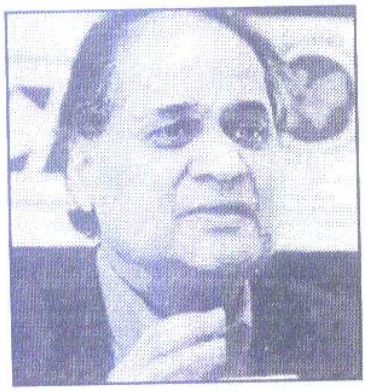

राहुल बजाज (67)

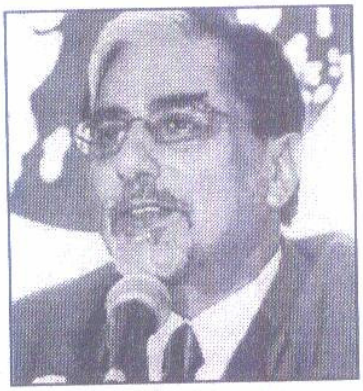

सुभाष चन्द्रा (55)

नरेन्द्र पाटनी (63)

नरोत्तम सेक्सरिया (56)

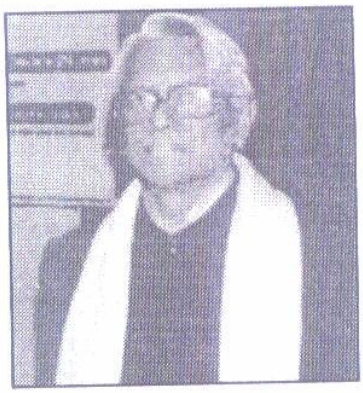

जयप्रकाश गौड़ (75)

कुंज बिहारी अग्रवाल

अध्यक्ष निर्वाचित

श्री कुंज बिहारी अग्रवाल, प्रबन्ध-निर्देशक, रूपा एंड कं. लि. पश्चिम बंगाल होसियरी एसोसियेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। उनके कार्यकाल में एसोसियेशन का नया मुखपत्र के प्रकाशन का शुभारंभ किया गया है। कमिटि के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बी. एन. सेक्सरिया, अन्य उपाध्यक्ष - श्रीअशोक तोदी, श्री विनोद गुप्ता, श्री एस. एस. सरावगी, महासचिव श्री बी. डी. कोठारी, उप-सचिव श्री प्रकाश चाण्डक एवं श्री सुदेश कुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष हैं।

उम्र नफरत की बड़ी या प्यार की ज्यादा उमर है

मोहनलाल तुलस्यान, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

कारवाने-सुबह यारों कौन-सी मंजिल में है
मैं भटकता फिर रहा हूँ रोशनी के नाम पर।

दुनिया में दो ही चीजें बहुमूल्य हैं— धन और ध्यान। ध्यान हमारी आंतरिक संपत्ति है। जिसे लेकर हम जन्म के साथ आते हैं और धन जो बाहरी संपदा है और इसकी प्राप्ति के लिए हमें जी-तोड़ मेहनत करनी होती है, जीवन भर भाग-दौड़ करना होता है, संकटों से जूझना होता है। धन बड़ी मुश्किल से मिलता है। हजारों की भीड़ में एकाध ही होते हैं जो धन की प्राप्ति में सक्षम हो पाते हैं। बाकी लोगों को निराशा हाथ आती है, लेकिन इसके विपरीत ध्यान में भाग-दौड़, मेहनत एवं विवादों की जरूरत नहीं होती। अपने मन को एकाग्रचित्त करने मात्र से ध्यान की अवस्था में पहुंचा जा सकता है।

मेरे ऐसा कहने का आशय यह नहीं है कि मनुष्य को सिर्फ ध्यान ही करना चाहिए एवं धन से दूर रहना चाहिए। मेरा आशय यह है कि प्रत्येक मनुष्य को धन के साथ ध्यान के समन्वय को महत्व देना चाहिए क्योंकि बिना धन के सम्मानपूर्वक जीवन जीने की कामना अधूरी रह जाती है। व्यक्ति परिवार, समाज तो क्या अपनी ही नजरों में गिर जाता है। उसके सारे सपने चूर-चूर हो जाते हैं। पर आवश्यकता से अधिक धन की प्राप्ति भी हानिकारक साबित होती है। धन अर्जित करने की होड़ में आदमी पागलपन का शिकार हो जाता है। वह भले-बुरे रिश्ते-नाते, अपने-पराये का फर्क करना छोड़ देता है और बहुत कुछ ऐसा कर जाता है जो व्यापक समाज में उसकी छवि को धूमिल करने का सबब बन जाता है।

हमारी भारतीय परंपरा में सदियों से इस बात पर बल दिया जाता रहा है कि मनुष्य जीवन को संयमित रूप से जिये। जीवन में चार आश्रमों की व्यवस्था का उद्देश्य भी यही था कि अपरिमित जीवन के द्वंद्व से मनुष्य स्वयं को बचाए। पहले अध्ययन, फिर गृहस्थ कर्म तत्पश्चात् वानप्रस्थ एवं अंत में संन्यास की अवधारणा का सूत्र देकर हमारे मनीषियों ने दूरदर्शिता का परिचय दिया था।

पर सभ्यता के विकास क्रम में हम आज जहां पहुंचे हैं वहां हमारी सारी प्राचीन मान्यताएँ, अवधारणाएं भुलाई जा रही हैं। सिर्फ धन को केन्द्र में रखकर पारिवारिक, सामाजिक संरचनाएं बनाने की कोशिश हो रही है और इसका प्रतिफलन विवादों के रूप में सामने आ रहा है। एक-दूसरे के प्रति घृणा, ईर्ष्या, द्वेष से भरकर बदले की भावना से काम करने पर उतारू है। बदले की यह भावना इतनी बलवती है कि कोई किसी के उज्ज्वल पक्ष को देखना ही नहीं चाहता। सब दूसरे की कमियों, खामियों को ढूंढने में लगे रहते हैं और जैसे ही किसी की कोई कमी पकड़ में आई तो बस! उस पर हमला शुरू। पूरे समाज में उसकी कुचर्चा। आजकल लोग दूसरे की कमियों-खामियों की चर्चा में जितना समय बर्बाद करते हैं उतना समय अगर गुणों की चर्चा में बिताएं तो कायाकल्प हो सकता है। पूरे समाज में अच्छाइयों को अपनाने की होड़ लग सकती है। लेकिन इसके लिए जिस मानसिक बनावट की जरूरत है उसका सर्वथा अभाव हो गया है।

हम मानव मात्र में ही प्रेम के हिमायती नहीं रहे हैं, बल्कि पशु-पक्षी, जीव-जन्तु यहां तक कि पेड़-पौधों तक से प्रेम-प्रदर्शन में अग्रणी रहे हैं। हमारे ग्रंथों में प्रेम को आधार बनाकर काव्यों की रचना को बहुत सराहा गया है। संत-मुनि प्रेमभावना के प्रचार-प्रसार में रात-दिन एक किये हुए हैं परन्तु प्रेम की भावना निरंतर घटती जा रही है तो इसके मूल में हमारा मनोविकार ही प्रमुख है।

धन की होड़ में ध्यान की बात हम भूल गये हैं। जीवन की कठोर सच्चाइयों से मुंह मोड़कर हम कृत्रिम आनन्द के प्रदर्शन में लगे हैं। कृत्रिमता का यह आवरण इतना मोहक और जादुई है कि उसे ही असल मानकर अपनाने का चलन हो गया है। जब कभी सच्चाई सामने आती है तो सिवाय पश्चाताप के और कुछ हाथ नहीं आता। तब तक सुधार की गुंजाइश भी नहीं रह जाती क्योंकि वक्त का पहिया जिस तेजी से घूम रहा है उसमें पीछे मुड़कर देखने की छूट नहीं है।

जीवन नश्वर है। एक न एक दिन सबको इस धरती से कूच कर जाना है। हमारा काम, हमारी भावना ही यहां धरोहर रह जाती है इसलिए क्या यह लाजिमी नहीं कि जीवन में हम कुछ ऐसा कार्य करें, कोई ऐसा आदर्श स्थापित करे जो हमारे बाद हमारी याद दिलाए। यह धन की बिना पर संभव नहीं है। इसके लिए ध्यान की जरूरत होती है। अपने अंदर झांकने की जरूरत होती है। कबीरदास जी ने ठीक ही कहा है:-

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल ढूंढा आपना मुझसा बुरा न कोय॥

हम औरों की बुराइयों पर चर्चा न करके अपनी बुराइयों पर विजय पाए, अपने अंतर को रोशन करें तो दुनिया में जीने का अंदाज बदल जाएगा। नफरत की आग सदा-सदा के लिए बुझ जाएगी और तब प्रेम की गंगा के अमृत जल का प्रवाह हमारे जीवन में जो खुशियां लायेगा वह अनन्त काल तक हमें आह्लादित करता रहेगा। नीरज ने लिखा है— ***उम्र नफरत की बड़ी या प्यार की ज्यादा उमर है।*** मैं कहता हूँ :

क्या करेगा प्यार वह भगवान को, क्या करेगा प्यार वह ईमान को
जन्म लेकर गोद में इन्सान की, कर न पाया प्यार जो इन्सान को।

(नीरज) ●

तोड़ दो मन ! अहम् तोड़ दो

राम अवतार पोद्दार, *राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

उत्सवों के दिन हैं। समाज विकास का यह अंक जब तक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक दीपावली का पावन त्यौहार बीत चुका होगा इसलिए सभी सहकर्मियों, शुभचिन्तकों, मित्रों एवं मारवाड़ी समाज के समस्त सदस्यों को हार्दिक मंगलकामनाएं।

हम उत्सवधर्मी जीव हैं। सदियों पहले हमारे ऋषियों-मुनियों-मनीषियों ने उत्सवों की परिकल्पना की और हम आज तक परंपरा के रूप में उसकी पुनरावृत्ति करते आ रहे हैं। परंपराओं के निर्बहन में हमारा पूरी दुनिया में कोई सानी नहीं है। छोटी से छोटी रस्मों को निभाने की हमारी कोशिश बेमिसाल है।

हम जानते हैं कि उत्सवों की परिकल्पना के पीछे महान उद्देश्य छिपा हुआ है। उत्सव हमें अपने परिवार और समाज के सदस्यों के साथ मिलने-जुलने, वैचारिक आदान-प्रदान करने, गिले-शिकवे भुलाकर रिश्तों की नई शुरूआत करने एवं मनमोहक भोजन साथ-साथ करने का अवसर प्रदान करता है। यह हमारी परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, छूत-अछूत का भेद होते हुए भी कहीं न कहीं सबको समान दृष्टि से देखने की उदारता विद्यमान है। अनेकता में एकता का सिद्धांत उत्सव के दौरान ही परिलक्षित होता है।

रोजी-रोटी के संधान में भागमभाग भरी जिन्दगी के आदी बन चुके हम उत्सव का आनंद उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। छुट्टी के माहौल में अपनों से मिलकर जहां मन को नई स्फूर्ति मिलती है वहीं तन में नया जोश भी भरता है।

सभ्यता के विकास क्रम में जहां हमारी जीवनशैली में व्यापक बदलाव आया है वहीं उत्सवों की प्रकृति में भी परिवर्तन हुए हैं। पहले उत्सव मनाने में सादगी बरती जाती थी। उत्सव के उद्देश्य को प्रमुखता दी जाती थी।

आजकल उत्सव में भी धन का प्रदर्शन, आडम्बर मुख्य होता जा रहा है। पिछले वर्षों में यह देखा गया है कि समाज के एक वर्ग ने उत्सव की आड़ में धन का प्रदर्शन करके सामाजिक विषमता की खाई को चौड़ा करने का काम किया है। इससे समाज के वृहत अंश में, जिसके पास प्रदर्शित करने योग्य धन का अभाव है, आक्रोश और घृणा का संचार हो रहा है। सामाजिक-पारिवारिक समरसता की जिस पावनधारा के लिए हमारी पहचान थी, वह भी खत्म होती जा रही है। स्वार्थजनित मानसिकता इतनी प्रबल हो गई है कि अपने परिवार और समाज से संबंधों को बनाए रखने में भी स्वार्थ आड़े आता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की शाश्वत भावना को जीवन का आदर्श मानने वाले हम समय के साथ इतने संकुचित हुए हैं कि आनेवाले दिनों में 'स्वयंमेव कुटुम्बकम' की सीमित परिभाषा में बध जाना ही हमारी मजबूरी (नियति) न बन जाय।

वस्तुत: जीवन को देखने का नजरिया बड़ी तेजी से बदला है। सामूहिक प्रयासों से बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने की जिजीविषा अब नहीं रह गई है। लोग छोटे-छोटे लक्ष्यों के पीछे पूरी उर्जा खपा रहे हैं। सफलता के सोपान तक पहुंच चुके लोगों का यह ध्येय नहीं रह गया है कि वे औरों को भी अपने साथ लेकर चलें एवं नये आयाम गढ़ें।

जब जीवन की दिशा और दशा एकाकीपन की ओर उन्मुख हो तो स्वभाविक रूप से इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में दिखाई पड़ता है। उत्सव इसका अपवाद नहीं है। उत्सव के नाम पर तामझम, आडम्बर चाहे जितना बढ़ जाय लोगों की आंतरिकता के अभाव में मूल अर्थ को प्राप्त करना संभव नहीं रह गया है। एक औपचारिकता निभाकर उत्सव की इतिश्री मान ली जाती है।

बहुभाषी, बहुरंगी, बहुआयामी सामाजिक संरचना वाले देश में उत्सव ही एक ऐसी कड़ी है जिससे सबको जोड़ा जा सकता है। इसलिए उत्सव की प्रासंगिकता को बनाए रखने की आवश्यकता आज पहले की तुलना में ज्यादा है।

तथाकथित आधुनिकता की आंधी में हमारी सामाजिकता, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना जिस तेजी से तिरोहित हो रही है उसमें यह सर्वाधिक जरूरी हो गया है कि हम अपनी परंपरा के उन सूत्रों को इस तरह नियोजित करें कि वह सबके लिए मान्य हो। ऐसी सामाजिक व्यवस्था बने जिसमें हर वर्ग की भावनाओं का समुचित प्रतिनिधित्व हो। एक सीमा से अधिक आडम्बर की छूट किसी को नहीं हो। शक्ति के दर्प और धन के अहं से मुक्त होकर मानवीयता के कोमल भावनाओं से जब लोग जुड़ेंगे तभी उत्सव सार्थक होंगे, जीवन सुखमय होगा और वास्तविक आनन्द की अनुभूति सब कर सकेंगे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

तोड़ दो मन! अहम तोड़ दो
मत शिखर पर अकेले रहो
मुक्त मैदान में भी बहो
अंध क्षण में कभी ली हुई
दंभ की हर कसम तोड़ दो
जिन्दगी बंध गई झील-सी
एक बीमार कंदील-सी
आदमी के हितों के लिए
निर्दयी सब नियम तोड़ दो
श्रेष्ठतम सृष्टि की सर्जना
व्यर्थ उस प्यार की वर्जना
स्वस्थ संशोधनों के लिए
रूढ़ियों की रसम तोड़ दो॥

ऐसा होगा तभी सबका कल्याण होगा और एक बेहतर विश्व का सपना साकार हो सकेगा। ●

हाँ, दिन में भी विवाह हो सकता है!

हमारे समाज में दिन में विवाह करने से प्राय: लोग अशुभ फल के भय की निराधार कल्पना किये करते हैं।

यह दिना विवाह निषेध प्रथा संभवत: क्रूर और असभ्य लोगों के साम्राज्यकाल से चली आ रही है, जबकि वैवाहिक शृंगार से सुसज्जित कन्याओं का दुर्वासना लिप्त लोग अपहरण कर लिया करते थे। तब जनता ने इस विपत्ति से बचने के प्रयास स्वरूप रात्रि के एकांत में ही विवाह करने की प्रथा प्रारंभ की और तभी से यह प्रथा आज तक चली आ रही है।

वेद या शास्त्रों में दिन में विवाह करना निषेध नहीं है। विवाह सूत्र मंगल संस्कार के लिए दिन या रात्रि में जब कभी भी ज्योतिष शास्त्रोक्त लग्नशुद्धि उपलब्ध हो, लग्न में किये जा सकते हैं।

गृह्यसूत्र नामक श्रुतिग्रंथ में लिखा है कि : अथैनां सूर्य मुदीक्ष यति तच्चोक्षुरिति, अर्थात् सप्तपदी विधान के बाद वर के द्वारा कन्या को तच्चक्षु इस सूर्य प्रार्थनार्थक वेदमंत्र के उच्चारण के साथ सूर्यदर्शन कराने का विधान है। सूर्यदर्शन दिन में ही संभव है। इससे दिन में विवाह वेदों के द्वारा सिद्ध होता है।

संस्कार मूचख नामक ग्रंथ में इस प्रकार लिखा है :

मुख्यो विवाह: पूर्वान्हे, मध्यान्हे चोत्तमोत्तम:।
रात्रो विवाहो गौणस्यात्, अपरान्हेतु गर्हित:॥

अर्थात्, पूर्वाह्न में विवाह की प्रमुखता है। मध्याह्न में उत्तमोत्तमता है। रात्रि में विवाह गौण है और अपराह्न में निंदित है। अत: उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि दिन में विवाह करना किसी भी तरह से निषेध नहीं है। रात्रिविवाह की प्रथा किसी कारणवश प्रारंभ हुई थी, किन्तु यह अनिवार्यता नहीं है।

-सौजन्य : सत्संग पत्रिका

भारत में सात फेरों का कारोबार 500 अरब का

शादी-ब्याह महज दो दिलों को जोड़ने वाला बंधन नहीं रह गया है, बल्कि यह एक उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है। भारत में 500 रुपये का अनुमानित यह उद्योग सालाना 25 फीसदी की तेज रफ्तार से बढ़ रहा है। शादियों पर खर्च के मामले में भारतीय लोग अमेरिकियों से भी आगे हैं। अमेरिका में मध्यवर्गीय परिवार में एक शादी पर जहां औसतन 23 हजार डॉलर खर्च किये जाते हैं, वहीं भारत में यह रकम करीब 34 हजार (दहेज और मूल्य उपहारों को छोड़कर) बैठती है। घर या मंदिर के साधारण मंडप में होने वाली शादियां अब हवाई जहाज और क्रुज तकमें होने लगी है। शादियों के प्लानिंग प्रोफेसनल लोगों से कराने के बढ़ते चलन के परिणाम स्वरूप वेडिंग प्लानिंग कैरियर के एक अच्छे विकल्प के रूप में उभर रहा है। शादी उद्योग की संभावनाओं को भुनाने के लिए बाजार भी पूरा जोर लगा रहा है।

पिछले साल दिल्ली के एक पांच सितारा होटेल में चार दिवसीय विवाह-मेला आयोजित किया गया। मेले में लग्जरी क्रुज से लेकर डिजाइन कपड़े, गहने, फर्निचर तक रखे गये थे। इस मेले में करीब सवा लाख लोग आए और लगभग छह करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ब्राइड एंड ग्रुम नाम से ऐसा ही एक अन्य मेला आयोजित करने वाली गीतिका का कहना है-यह (शादी) भारत का एकमात्र उद्योग है। जिसमें मंदी नहीं है। ब्राइड एंड ग्रुम में तो कार बनाने वाले कंपनी हुंडई और फोर्ड ने भाग लिया। शादियों के मौसम का फायदा उठाने के लिए वाहन, फर्नीचर और उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वाली कंपनियां रियायती पैकेज प्राइस घोषितकरती है। एक अनुमान के मुताबिक शादियों के दौरान दुपहिया वाहनों की बिक्री 20-25 फीसदी तक बढ़ जाती है। वाहन, उपभोक्ता समान, आभूषण, फर्नीचर, कपड़ों आदि के बाजार में भी इस मौसम में जबर्दस्त उछाल देखा जा सकता है।

उप-समिति पदाधिकारी

अ.भा. मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद शाह ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा महिला उपसमिति की अध्यक्षता पद उनकी व्यस्तता के कारण स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की है। उनकी नियुक्ति की घोषणा समाज विकास के गत अंक में की गयी थी।

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

समाज की स्थिति और प्रगति

मौजीराम जैन, बलांगीर, उड़ीसा

अनेक वर्षों की गुलामी ने देश की प्रगति को स्थाणु कर दिया था। आजादी के बाद भारत में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। आर्थिक क्षेत्र में एक आम भारतीय अविकसित की सीमारेखा से विकासशील एवं अब विकसित राष्ट्र का नागरिक बनने जा रहा है। अध्ययन की दिशा में देश ने प्रगति की है। औद्योगिक क्रांति हुई है। राष्ट्र की प्रगति के साथ ताल मिलाकर समाज ने भी भारी प्रगति की है। आर्थिक क्षेत्र में हमारा मारवाड़ी समाज इन दिनों में विशेष सम्पन्न बना है। इस क्षेत्र में कम से कम हम अव्वल दर्जे पर हैं। समाज में विद्या और बुद्धि का विकास हुआ है। गांव-गांव में स्कूल, कालेज खुले हैं, जिसका समाज ने लाभ लिया है। लेकिन जितना लाभ उठाना चाहिए, उतना लाभ समाज नहीं उठा पाया। अन्य लोगों का श्रद्धा भाजन बनने के लिए समाज को शिक्षा के क्षेत्र में छलांग लगाकर आगे बढ़ना होगा। इक्कीसवीं सदी ज्ञान और विज्ञान की है। शिक्षा का युग है। इसके बिना समाज उन्नति नहीं कर सकता। समाज का सर्वांगीण विकास की कल्पना को शिक्षा के बिना वास्तविक नहीं बनाया जा सकता। समाज को इस मामले में विशेष ध्यान देना होगा।

देश की औद्योगिक प्रगति में समाज ने भरपूर योगदान दिया है। आज कल उदारीकरण की नीति को विश्व भी अपना रहा है, हम भी अपना रहे हैं। इसके चलते देश को मुनाफा हुआ है तो नुकसान भी कम नहीं हुआ है। उदारीकरण के चलते बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज आई। जिससे लोगों को अच्छी वस्तु कम भाव में मिली। लेकिन गलाकाटु स्पर्धा की वजह से छोटे कारखाने टिक नहीं पाते। लघु उद्योगपतियों का दिवाला पिट गया। एक आम आदमी व मजदूर को बहुत नुकसान हुआ। विदेशी पूंजी की बहुतायत रही। हमारे सामान उनका मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं।

कम्प्युटर युग आया है, काम करना सहज और सुविधाजनक बना है। दस-बीस व्यक्तियों का काम अकेला आदमी आसानी से कर लेता है। इससे लोगों को काम नहीं मिल रहा है। बेकारी बढ़ी है, इसके परिणाम देश के लिए घातक रहेगा। क्योंकि भारत जनबहुल देश है। 100 करोड़ से अधिक की आबादी। यंत्र ने मानव को मजबूर कर दिया है। प्रचुर श्रम की उपलब्धता में देश के युवा को काम नहीं है। स्वेच्छिक सेवा निवृत योजना ने व्यक्ति को क्षणिक लाभ पहुंचाया है। किंतु आगे चलकर काफी कठिनाईयां आएगी, यह साफ दिख रहा है। अधिक लोगों को वर्ष भर काम मिले, इसके प्रति ध्यान देना है। अमेरिकी दृष्टि में विश्व एक बाजार है। किंतु हम भारतीयों की दृष्टि में विश्व एक परिवार है। परिवार का कोई भी सदस्य भूखा रहे या बेकार रहे, यह हमें मान्य नहीं है। इस दिशा में हमारी नीति स्पष्ट होनी चाहिए। आज देश में राजनीतिक अस्थिरता है। यह स्थिति में आने वाले कई वर्षों तक सुधार की संभावना नहीं लगती। इससे देश को आगे बढ़ने में रुकावट भी आई है। आज मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व देश के राजनीतिक क्षेत्र में बहुत कम है। यह गहन चिंता का विषय है। समाज के ज्यादा से ज्यादा लोग राजनीति में प्रवेश करना चाहिए प्रजातांत्रिक व्यवस्था में राजनीति भी इसकी प्रगति की मुख्य धारा है। राजनीति में जाकर देश हित का चिंतन जरूरी है। हमारे समाज का व्यक्ति अगर राजनीति करेगा तो राजनीति का व्यवसायीकरण कर सकता है, किंतु राजनीति का अपराधीकरण नहीं करेगा। आज के युग में व्यवसायीकरण को सम्मान की नजर से देखा जाता है। प्रगति के लिए यह जरूरी है। राजनीति का अपराधीकरण न हो, इसके लिए समाज के नि:स्वार्थ व्यक्तियों को राजनीति में आकर आदर्श प्रस्तुत करना होगा।

इन दिनों में समाज (हमारा मारवाड़ी समाज) कुछ भटक सा गया है। हमारे पूर्वजों ने जो देन समाज को दिया है, उसे हम भुला रहे हैं. पुराने मूल्यों को तोड़ रहे हैं, किंतु नये मूल्यों की स्थापना नहीं कर पा रहे हैं।

महापुरुषों ने कहा है- मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, लेकिन उन्हीं कर्मों के फल भोगने में परतंत्र है। उसी प्रकार हम धन अर्जन में स्वतंत्र है। लेकिन उसको व्यय करने में हम स्वतंत्र नहीं है। आवश्यकता मुताबिक खर्च करके शेष धन को समाज और देश हित में लगाना होगा। धन समाज और देश का है। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि हम स्वअर्जित धन के ट्रस्टी है। हमारे समाज के भामाशाह जैसे बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं। आज समाज में अपव्यय, फिजूलखर्ची और प्रदर्शन का जलजला आया हुआ है। यह समाज को खोखला कर रहा है। इस बात पर समाज प्राथमिकता के आधार पर सोचें। हमारे कार्य का समाज के अन्य वर्ग पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इस बात पर समाज के अगुआ वर्ग को विशेष जागरुक होना होगा। भारतीय समाज त्याग प्रधान समाज था। दुर्भाग्यवश यह भोगप्रधान बन गया है। उसे पुन: त्याग प्रधान समाज के रूप में परिणीत कर गौरव के शिखर तक पहुँचाना होगा। टंडनजी राज्य सभा के सांसद थे। उन दिनों उन्हें चार सौ रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था। पूरा वेतन वह समाज सेवा में दे देते थे। जब किसी ने उन्हें पूछा कि उनका काम कैसे चलता है। उन्होंने कहा था-मेरे सात पुत्र है। वह अपने अपने काम धंधे में लगे हुए हैं। प्रत्येक पुत्र से मुझे सौ रुपये प्रतिमाह मिलते हैं। मेरा व्यक्तिगत खर्च 300 से 400 प्रति माह है। बाकी का पैसा भी मैं समाज सेवा संगठन को दे देता हूँ। ऐसे व्यक्तित्व न केवल पूजनीय है, बल्कि अनुकरणीय है। आज आवश्यकता है सामाजिक विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन हो एवं हमारा मारवाड़ी समाज शुद्ध भी बने, प्रबुद्ध भी बनें। ●

समाज में दानवीरों की कमी नहीं

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का घाटा आज भी गुप्त-दानदाताओं द्वारा पूरा किया जाता है

व्याप्त धारणा के विपरीत मारवाड़ी समाज में दान देने की प्रवृत्ति आज भी जीवित है। आपने कहते हुए सुना होगा कि अच्छे कार्यों के लिये समाज में धन की कमी नहीं है। यह बात शत-प्रतिशत समय के साथ-साथ सोच में एक बदलाव अवश्य आया है। पर समय था जब प्रत्येक व्यापारी या व्यावसायिक प्रतिष्ठान 'बत्ती' के रूप में अपनी आय का एक निर्धारित अंश दान कोष के लिये निकाल देता था जिसे धर्मार्थ व्यय किया जाता था—गौशाला, धर्मशाला, या प्याऊ आदि के लिये दान दिया जाता था।

आज दान के रूप एवं स्वरूप में भले ही परिवर्तन घटा हो, लेकिन प्रवृत्ति आज भी कायम है। इसका कोलकाता में सबसे बड़ा उदाहरण आज की सबसे पुरानी सेवा संस्था मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में देखने को मिलता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के हीरक जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने अपने अभिभाषण में मारवाड़ी समाज के सेवा कार्यों की चर्चा करते हुए कलकत्ता की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का उल्लेख किया था।

अधिकारिक तौर से प्राप्त जानकारी के अनुसार मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में कई वर्षों से प्राय: पाँच लाख रुपये महीने का घाटा है जिसे मारवाड़ी समाज के दानवीरों द्वारा पूर्ण किया जा रहा है। ●

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना

शिक्षा के विकास एवं विस्तार हेतु समाज से नम्र निवेदन

बिहार शिक्षा समिति विगत 57 वर्षों से समाज के मेधावी छात्/छात्राओं को प्रत्यावर्तनीय छात्रवृत्ति के माध्यम से निरन्तर आर्थिक सहयोग करती आ रही हैं ताकि समाज का कोई भी छात्/छात्रा अर्थ के अभाव में शिक्षा से वंचित न रह सके। परन्तु अर्थाभाव के कारण शिक्षा समिति आज के शिक्षा के बढ़े हुए आर्थिक बोझ के दृष्टिकोण से न तो यथेष्ट संख्या में छात्रों को उक्त सहायता कर पा रही है और न ही अपेक्षित राशि ही दे पा रही है, जिससे कि समाज में शिक्षा के विकास को अपेक्षित स्तर तक ले जाने के अपने लक्ष्य में यह सफल हो सके। शिक्षा समिति के द्वारा अब तक लगभग 11 सौ छात्र-छात्राओं को लाभान्वित किया जा चुका है और वर्तमान में 34 छात्र-छात्राओं के बीच लगभग दो लाख की राशि दी जा चुकी है जिसे और भी बढ़ाये जाने की जरूरत है।

किसी भी समाज का सही अर्थों में विकास शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। जिसका वर्तमान में भूमंडलीकरण के दौर में महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है विशेषकर तकनीकी शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा का। सर्वमान्य है कि शिक्षा से बढ़कर कोई भी न तो दान होता है न वरदान ही-'**नास्ति विद्या-समम् चक्षु**'। संभवत: इसी दृष्टिकोण से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने भी अपनी स्थापना से लेकर अब तक के काल में पहली बार उच्च शिक्षा हेतु कोष गठन का निर्णय लिया है।

अत: आप समाज के सभी महानुभावों से मैं पुरजोर अपील करता हूँ कि आप शिक्षा समिति के अतिविशिष्ट दानकर्ता (11001) रु., विशिष्ट दानकर्ता (5101) रु. या पोषक दानकर्ता के रूप में इससे जुड़कर इस महान एवं पुनीत कार्य में अपना यथासंभव यथेष्ट सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

-प्रो. (डा.) एस. एस. तुलस्यान
अध्यक्ष एवं पूर्व प्रतिकुलपति तथा कार्यवाहक कुलपति
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

चले गर्भ में जब औजार
कन्या भ्रूण करे चीत्कार
हे इन्सान! तुझे धिक्कार-तुझे धिक्कार!
-मारवाड़ी युवा मंच

आभार

अखिल भारत वर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को विभिन्न आवश्यकताओं एवं कार्यक्रमों के लिये समाज से खुलकर सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हो रहा है। इस सहयोग के वगैर, हमारे सीमित साधनों में, संभवत: हम बहुत कुछ नहीं कर पाते।

हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं:

श्री विवेक पोद्दार

41, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-7

जिन्होंने सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय के लिये एक फैक्स मशीन, एक प्रिंटर एवं एक स्केनर दान-स्वरूप प्रदान करने की घोषणा की है। आभार!

श्री अरविन्द बियाणी

कोलकाता

—अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को श्री अरविन्द बियाणी की कम्पनी मेसर्स श्याम एयर सर्विस एवं मेसर्स फर्स्ट फ्लाइट कोरियर द्वारा नि:शुल्क कोरियर सेवा प्रदान की जा रही है। आभार!

श्री राधेश्याम जी गुप्ता

साल्ट लेक, कोलकाता

—राष्ट्रीय चिन्तन शिविर के आयोजन के लिये श्री राधेश्यामजी गुप्ता ने हमारी राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री बाबूलाल जी धनानिया के अनुरोध पर साल्टलेक स्थित स्व० जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन नि:सुल्क प्रदान किया है। आभार!

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार

सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष स्मृति में गठित 'भंवरमाल सिंघी समाज सेवा न्यास' द्वारा समाज सेवा विशेषकर समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिये समाज सेवा पुरस्कार दिया जाता है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से अनुरोध है कि 2004-2006 कार्यकाल में समाज सेवा कार्य के लिये उपयुक्त नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 15 नवम्बर 2006 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री नन्दकिशोर जालान	श्री सीताराम शर्मा	श्री मोहनलाल तुलस्यान
श्री हरिप्रसाद बुधिया	श्री मोहनलाल चोखानी	श्री गौरीशंकर कायां

उक्त पुरस्कार सम्मेलन के स्थापना दिवस समारोह में 25 दिसम्बर को कोलकाता में प्रदान किया जायेगा।

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

सुशील कुमार रूंगटा

'सेल' चेयरमैन

श्री सुशील कुमार रूंगटा ने 17 अगस्त 2006 को देश की सबसे बड़ी इस्पात कम्पनी स्टील अथारिटी आफ इण्डिया लि० (सेल) के चेयरमैन का पद भार ग्रहण किया है। इसके पूर्व श्री रूंगटा सेल के वाणिज्य निर्देशक थे।

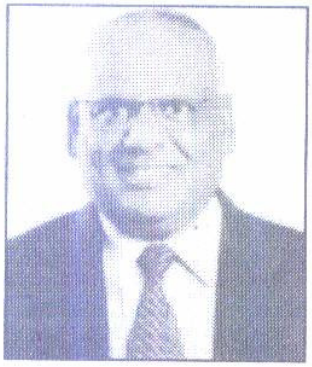

श्री रूंगटा ने बिड़ला इन्स्टीट्युट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी पिलानी, राजस्थान से इंजीनियरिंग स्नातक परीक्षा पास की एवं इण्डिया इन्स्टीट्यूट ऑफ फारेन ट्रेड, नयी दिल्ली से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा प्राप्त की। पिछले 34 वर्षों से सेल में कार्यरत श्री रूंगटा फरवरी 2004 में निर्देशक पद पर आसीन हुए। मार्केटिंग के क्षेत्र में श्री रूंगटा ने सेल में कई नयी योजनाओं को आरम्भ किया। कार्मिक निर्देशक के रूप में श्री रूंगटा ने विभिन्न विभागों में अपने नये विचारों की छाप छोड़ी। श्री रूंगटा ने दुर्गापुर स्टील प्लान्ट के प्रबन्ध निर्देशक का अतिरिक्त भार भी संभाला। सेल को श्री रूंगटा से बहुत आशाएँ है कि वे सेल को इस्पात उद्योग से एक नयी ऊंचाई पर ले जाएंगे। श्री रूंगटा अपनी गहरी सोच, विश्लेषात्मक अध्ययन एवं व्यवहारिक कुशलता के लिये माने जाते हैं। 'समाज विकास' की श्री रूंगटा को बधाई एवं उनकी सफलता के लिये शुभकामनाएं।

राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

स्व. श्री सीतारामजी रूंगटा की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री नन्दलाल रूंगटा (चाई बासा) भूतपूर्व अध्यक्ष बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिये उक्त पुरस्कार की स्थापना की गयी है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से अनुरोध है कि 2004-2006 कार्यकाल में उक्त क्षेत्र में कार्य हेतु पुरस्कार के लिये नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 15 नवम्बर 2006 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री नन्दकिशोर जालान
श्री मोहनलाल तुलस्यान
श्री नन्दलाल रूंगटा
श्री सीताराम शर्मा
श्री रतनलाल शाह
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल

उक्त पुरस्कार सम्मेलन के स्थापना दिवस समारोह में 25 दिसम्बर 2006 को कोलकाता में दिया जायेगा।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : अष्टम नि:शुल्क कृत्रिम पांव शिविर

8 अक्टूबर। प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं कलकत्ता मारवाड़ी महिला शाखा द्वारा आयोजित अष्टम नि:शुल्क कृत्रिम पांव शिविर का आयोजन महावीर सेवा सदन में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर उद्घाटनकर्त्ता के रूप में श्री मो० सलीम, सांसद, विशिष्ट अतिथि श्री रतन शाह, समाज सेवी, श्रीमती अनिता सराफ, अध्यक्षा, प० बंग प्रा० मारवाड़ी महिला सम्मेलन, श्री जे. एस. मेहता, समाजसेवी, श्री जितेन्द्र अग्रवाल, समाज सेवी व उद्योगपति तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आठवां नि:शुल्क कृत्रिम पांव शिविर में भाषण देते हुए श्री मोहम्मद सलीम (सांसद), मंच पर उपस्थित सदस्य बायें से सर्वश्री श्याम सुन्दर बागड़िया, रतन शाह, लोकनाथ डोकानिया व जितेन्द्र अग्रवाल।

सांसद श्री मो० सलीम ने विकलांग लोगों के सहायतार्थ सम्मेलन द्वारा इस तरह के आयोजन पर कहा कि विकलांग लोगों के लिये कृत्रिम पांव शिविर देश के कोने-कोने में होना चाहिये। श्री रतन शाह ने कहा कि कृत्रिम पांव शिविर एक बहुत बड़ा समाज सेवा का काम है तथा इस तरह का कार्यक्रम बराबर होना चाहिये। श्री लोकनाथ डोकानियां, अध्यक्ष, बंग प्रा० मारवाड़ी सम्मेलन ने कहा की विगत 5 वर्षों से नि:शुल्क कृत्रिम पांव का शिविर करते आ रहे हैं। श्रीमती अनिता सराफ, अध्यक्षा, प० बंग महिला सम्मेलन ने कहा कि इस तरह का आयोजन प० बंग मारवाड़ीसम्मेलन व महिला सम्मेलन बराबर करती आ रही है। डा० नेवटिया एवं श्री जे. एस. मेहता ने भी अपने विचार रखें।

इस मौके पर समाजसेवी श्री हरी प्रसाद मालपानी, श्री रामनिवास चोटिया, उपाध्यक्ष, श्री विश्वनाथ सराफ, श्री अशोक पारख, श्री जितेन्द्र अग्रवाल तथा परिवार के सदस्यवृन्द, बीना चौधरी, श्वेता टिबड़ेवाल, बिमला डोकानियां, प्रमिला पाटोदिया, मंजु डोकानियां, नीलम चौधरी एवं अन्य अतिथिगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री श्याम सुन्दर बागड़िया ने किया और धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती मंजु यादुका ने दिया।

दीपावली प्रीति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री हरिप्रसाद जी बुधिया। उपस्थित हैं सर्वश्री सांवरमल भीमसरिया, विधायक दिनेश बजाज, सम्मेलन के राष्ट्रीय सभापति सीताराम शर्मा, पूर्व राष्ट्रीय सभापति मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री राम अवतार पोद्दार, प्रांतीय अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया आदि।

कोलकाता : दीपावली प्रीति सम्मेलन आयोजित

22 अक्टूबर 2006। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी श्री हरिप्रसाद बुधिया की अध्यक्षता में पारम्परिक रूप से दीपावली प्रीति सम्मेलन का आयोजन स्थानीय विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय सभागार में मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री बुधिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज अपने सामाजिक कार्यों के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्धहै। ये जहां भी जाते हैं अपनी मेहनत तथा सेवा के बल पर विशेष सम्मान हासिल करते हैं। श्री बुधिया ने समाज के कमजोर वर्ग के उत्थान करने की अपील की।

इस अवसर पर श्री बुधिया एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को पुष्पमाल्य से सम्मानित किया गया। प्रीति सम्मेलन में सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान एवं वर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार सहित विधायक दिनेश बजाज तथा पश्चिम बंग एवं कलकत्ता सम्मेलन के अनेकों पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने बताया कि प्रान्तीय सम्मेलन की स्थापना 1939 में, युवा मंच की 1983 में एवं महिला सम्मेलन की स्थापना 1985 में हुई थी। आज पूरे देश के 15 करोड़ मारवाड़ियों में 30 लाख मारवाड़ी पश्चिम बंगाल में निवास करते हैं।

श्री डोकानिया ने पश्चिम बंग प्रान्तीय सम्मेलन द्वारा किए जा रहे कई सामाजिक कार्यों की जानकारी दी तथा अविवाहित लड़के-लड़कियों के लिए सही सम्बन्धों की जानकारी प्रदान करना, साझा गोष्ठी, दीपावली व होली प्रीति सम्मेलन, महापुरुषों की जयन्ती एवं मारवाड़ी समाज के रत्नों का अभिनन्दन करना, विकलांग शिविर, चक्षु ऑपरेशन शिविर, चश्मा वितरण, पारिवारिक सलाह मशविरा प्रदान, समाज का दौरा कर संगठन को मजबूती प्रदान करना, शादी विवाह में फिजूलखर्जी का विरोध करना, मिलनी में चाँदी की जगह चार रुपये के व्यवहार को लागू करवाना, समाज के लड़के-लड़कियों के लिए छात्रावास निर्माण का प्रयास करना आदि।

समारोह का प्रारम्भ श्री रमेश गोयनका के गीतों से हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रान्तीय महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री सांवरमल भीमसरिया ने किया।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

चनपटिया शाखा का चुनाव

17.9.2006 को आहुत बैठक द्वारा निम्न व्यक्तियों का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ :- अध्यक्ष-श्री सत्यनारायण प्रसाद बंका, उपाध्यक्ष-श्री युगल किशोर चौधरी, मंत्री-श्री श्यामसुन्दर तुलस्यान, सहमंत्री-श्री पंकज कुमार झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष- श्री रमेश कुमार तुलस्यान, प्रादेशिक समिति सदस्य - श्री रामनिवास रूंगटा एवं कार्यकारिणी सदस्य - श्री विजय कुमार केजरीवाल, श्री सत्यनारायण प्रसाद रुंगटा, श्री प्रमोद कुमार डालमिया, श्री रतन कुमार डोकानिया, श्री सन्तोष कुमार डोकानिया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

गुवाहाटी : रक्तदान शिविर का आयोजन

6 अगस्त। सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा और महिला समिति के तत्वावधान में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 29 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर में उपस्थित थे मारवाड़ी दातव्य औषधालय के अध्यक्ष सर्वश्री लोकनाथ मोर, महामंत्री ओमप्रकाश चौधरी, संयुक्त मंत्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, भगवती प्रसाद खेमका सहित अन्यान्य पदाधिकारीगण। शाखाध्यक्ष श्री कैलाश लोहिया, शाखा मंत्री ललित धानुका, महिला समिति की अध्यक्षा सुलोचना नागौरी एवं महामंत्री नीलम अग्रवाल के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य हेमंत जैन, सुशील गोयल एवं माखन अग्रवाल ने शिविर की सफलता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मारघेरिटा - शाखा पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी समिति की घोषणा

सम्मेलन की मारघेरिटा शाखा के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी समिति इस प्रकार है:- अध्यक्ष - श्री सांवरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष-श्री रमेश कुमार पेरीवाल, सचिव-श्री पवन कुमार सांगानेरिया, सह सचिव-श्री दीनेश कुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष-श्री नन्दगोपाल मर्दा, परामर्शदाता-संतोष कुमार सांगानेरिया, जगदीश प्रसाद चाण्डक, मुंशीराम जी, तोलाराम जी, सियाराम अग्रवाल, रामनिवास जिन्दल, कोठामल पेड़ीवाल, राधेश्याम जिन्दल।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : वार्षिक आमसभा सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन शाखा कानपुर की वार्षिक आमसभा हुई। अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया ने सदस्यों का स्वागत करते हुए संस्था की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर सन्तोष व्यक्त किया तथा सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि संस्था का भूखण्ड क्रय करने तथा संस्था को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने हेतु प्रतिवर्ष कुछ न कुछ अंशदान करने की आदत डाले। महामंत्री अनिल परसरामपुरिया ने वार्षिक प्रतिवेदन में स्मारिका के प्रथम प्रकाशन व सदस्यों के परिचय पत्र वितरण हेतु सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

वर्ष 2005-06 की आडिटेड बैलेन्सशीट तथा आय-व्यय पत्रक तथा वर्ष 2006-2007 का अनुमानित बजट सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। वर्ष 2006-2007 हेतु मे. चौधरी पांडुया एंड कं. के श्री गणेश चौधरी को सर्वसम्मति से आडीटर मनोनीत किया गया। सत्र 2006-2008 की कार्यकारिणी हेतु मतदान में निम्न 19 प्रत्याशी विजयी घोषित किये गये:-

सर्वश्री सुशील कुमार तुलस्यान, जयकुमार डालमिया, विनोद कुमार मुरारका, संजय अग्रवाल, श्रीगोपाल तुलस्यान, महेश कुमार भगत, महेशचन्द्र शर्मा, बलदेव प्रसाद जाखोदिया, विश्वनाथ पारीक, हरिओम तुलस्यान, संजीव झुनझुनवाला, सुनील कुमार केडिया, कमलेश गर्ग, बालकृष्ण शर्मा, हनुमान प्रसाद कानोड़िया, पंकज बंका, सत्येन्द्र माहेश्वरी, श्रीराम अग्रवाल, भजनलाल शर्मा।

कानपुर : नये सत्र के पदाधिकारियों का मनोनयन

सम्मेलन की कानपुर शाखा की सत्र 2006-08 की प्रथम बैठक में नव-निर्वाचित कार्यकारिणी सदस्यों ने सर्वसम्मति से इस सत्र के लिए निम्न पदाधिकारियों को मनोनीत किया :-

अध्यक्ष, श्री सुशील कुमार तुलस्यान

सर्वश्री सुशील कुमार तुलस्यान-अधयक्ष, बलदेव प्रसाद जाखोदिया-प्रथम उपाध्यक्ष, सत्येन्द्र माहेश्वरी-द्वितीय उपाध्यक्ष, संजय अग्रवाल-महामंत्री, महेशचन्द्र शर्मा-मंत्री, संजीव झुनझुनवाला-संयुक्त मंत्री, महेश कुमार भगत-कोषाध्यक्ष। कार्यकारिणी सदस्यों में हैं सर्वश्री सत्यानारायण सिंहानिया, अनिल परसरामपुरिया, जयकुमार डालमिया, श्रीगोपाल तुलस्यान, विश्वनाथ पारीक, श्रीराम अग्रवाल, भजनलाल शर्मा, हनुमान प्रसाद कानोड़िया, बालकृष्ण शर्मा, सुनील कुमार केडिया, कमलेश गर्ग, विनोद मुरारका, पंकज बंका, हरिओम् तुलस्यान, सत्यानारायण नेवटिया, शिवरतन नेमानी, राकेश पोद्दार एवं विजय कुमार केडिया।

महामंत्री, श्री संजय अग्रवाल

मारवाड़ी महिला सम्मेलन

गुवाहाटी : चिकित्सा शिविर आयोजित

मारवाड़ी सम्मेलन महिला समिति की गुवाहाटी शाखा द्वारा शिशु विद्यापीठ के 75 छात्र-छात्राओं का चिकित्सकीय परीक्षण कर उन्हें नि:शुल्क दवाइयाँ प्रदान की गयीं। समिति ने विद्यालय को दो पंखे व चार टेबुल-डेक्स भी प्रदान किए। डा. अरुण पहाड़िया, डा. विवेक अग्रवाल; डा. संजय अग्रवाल ने परीक्षण में अपना सक्रिय सहयोग दिया। कार्यक्रम में सम्मेलन के गुवाहाटी शाखाध्यक्ष सर्वश्री कैलाश लोहिया, मंत्री ललित धानुका, महिला समिति की अध्यक्षा सुलोचना नागौरी, मंत्री नीलम अग्रवाल, उपाध्यक्ष उमा शर्मा के अलावा अनेकों सदस्यों का योगदान प्राप्त हुआ।

जूनागढ़ : अग्रसेन जयन्ती सम्पन्न

23 सितम्बर। मारवाड़ी महिला सम्मेलन जूनागढ़ शाखा द्वारा अग्रवाल समाज के अधिष्ठाता महाराज श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर निर्माणाधीन अग्रसेन भवन में श्री अग्रसेन महाराज की पूजा विधिपूर्वक की गयी एवं उनकी फोटो सुसज्जित कर शोभायात्रा निकाली गयी। बृजराज नगर के श्री सुभाषचन्द्र सितानिका समारोह के मुख्य अतिथि तथा पूर्व नगरपाल लायन मामिण अग्रवाल व मारवाड़ी समाज के सभापति श्री सुभाष अग्रवाल सम्मानित अतिथि, मुख्य वक्ता अग्रसेन भवन निर्माण कमिटी के सभापति श्री ललित अग्रवाल सहित युवा मंच के शाखा सभापति श्री गोपाल कुमार मित्तल एवं मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल ने समारोह को सम्बोधित किया। मंच संचालन श्री सन्तोष अग्रवाल ने किया।

मारवाड़ी युवा मंच

कांटाबाजी : पदाधिकारियों द्वारा शाखाओं का दौरा

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच को और मजबूती प्रदान करने, भाग्यशाली दानपत्र योजना की सफलता व राष्ट्रीय, प्रान्तीय एवं शाखा कार्यक्रमों पर चर्चा हेतु प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जीतेन्द्र गुप्ता (अंगुल), प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल (कांटाबाजी) एवं अन्य पदाधिकारियों ने 'मण्डल-ख' की कांटाबाजी, कांटाबाजी मिडटाउन, बंगोमुण्डा, सिनापाली एवं खरियार शाखाओं का दौरा कर विभिन्न कार्यक्रमों में अंश ग्रहण किया।

कांटाबाजी- प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जीतेन्द्र गुप्ता के सम्मान में मंच की कांटाबाजी शाखा व मिडटाउन शाखा द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें शाखाध्यक्ष श्री मुकेश जैन, शाखामंत्री श्री मनोज अग्रवाल सहित पूर्व राष्ट्रीय सह संयोजक श्री सुभाष अग्रवाल, प्रान्तीय उपाध्यक्षव राष्ट्रीय विकास के क्षेत्रीय संयोजक श्री राजेश अग्रवाल, प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्य श्री नारायण अग्रवाल, मिडटाउन शाखाध्यक्ष श्रीमती संगीता अग्रवाल, शाखामंत्री कुमारी आरती बंसल, पूर्व राष्ट्रीय सह संयोजिका श्रीमती ममता जैन आदि बड़ी संख्या में दोनों शाखाओं के सदस्यगण उपस्थित थे।

बंगोमुण्डा— आयोजित सभा में संगठन के विकास पर चर्चा की गयी जिसमें शाखाध्यक्ष श्री संतोष अग्रवाल, शाखामंत्री श्री वर्धमान जैन, दानपत्र योजना के मण्डलीय संयोजक श्री आनन्द अग्रवाल व सदस्यगण उपस्थित थे।

सिनापाली— समारोह में बड़ी संख्या में उपस्थित पुरुषप व महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्या रोकने हेतु आगे आने का आह्वान किया। समारोह की अध्यक्षता शाखाध्यक्ष श्री हरिओऽम् जिन्दल ने की एवं मंच संचालन शाखा मंत्री श्री प्रवीण बंसल ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि थे श्री नूनकरण अग्रवाल।

खरियार :— अग्रसेन सेवा समिति, मारवाड़ी युवा मंच व मारवाड़ी महिला समिति के तत्वावधान में तथा भीमसेन अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि थे युवा मंच के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जीतेन्द्र गुप्ता, मुख्य वक्ता थे राष्ट्रीय सेवा समिति, नवरंगपुर की प्रान्तीय कार्यवाहिका श्रीमती सुषमा जैन, सम्माननीय अतिथि थे। मंच के प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल। शाखा अध्यक्ष श्री अमित अग्रवाल व महिला समिति अध्यक्षा- श्रीमती सरोज अग्रवाल भी उपस्थित थी। मंच संचालन शाखामंत्री श्री सज्जन अग्रवाल व पूर्व शाखाध्यक्ष बंटी अग्रवाल ने किया। वक्ताओं ने समाज के विकास हेतु संगठन का होना आवश्यक बताया तथा महिला और पुरुष को मिलकर देश में बिगड़ते लिंग अनुपात को कम करने हेतु कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए आगे आने का आह्वान किया। दान पात्र के जरिये बच्चों में सेवा की भावना भरने हेतु चलाये जा रहे कार्य के बारे में बताया कि इस दान से विकलांगों की मदद की जाएगी। प्रान्तीय अध्यक्ष ने खरियार शाखा को एक सक्रिय शाखा के रूप में निरूपित किया। प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल ने खरियार में मंच की देखरेख में कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण शिविर लगाने का आह्वान किया तथा सभी से राष्ट्रीय दानपत्र योजना में सहयोग देने की अपील की। उन्होंने श्री दिनेश अग्रवाल को प्रान्तीय सहायक मंत्री के रूप में मनोनीत किया तथा मंच विकास के तहत 18 युवती महिलाओं व 33 युवकों को शाखा की सदस्यता प्रदान करते हुए शपथ पाठ करवाया।

समारोह में शाखा के सलाहकारों व पूर्ण शाखाध्यक्षों पर सम्मान एवं प्रथम तीन महिला सदस्याओं को प्रमाण पत्र और विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण एवं अतिथिगणों को प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती सरिता सोनी ने किया।

कांटाबांजी : युवा विकास माह आयोजित

युवा विकास के जरिए व्यक्ति में छिपी प्रतिभाओं को सामने लाने हेतु अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर युवा विकास माह मनाया गया।

कार्यक्रम में 'त्यौहार' एवं 'भारत विजन 2020' विषयों पर चित्रांकन प्रतियोगिता, 'मेरे सपनों का भारत' विषय पर निबंध प्रतियोगिता तथा 'कन्या भ्रूण संरक्षण' विषय पर खुली स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। सर्वश्रेष्ठ एवं श्रेष्ठ प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया जिनमें थे सौम्य सरोज त्रिपाठी, पूजा कुमारी, संतोष आनन्द मेहेर, प्रीति अग्रवाल, मयंक खेमका, दीक्षा अग्रवाल एवं नेहा खेमका।

खेतराजपुर : महिला शाखा 'नवचेतना' का गठन

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल के. जाजोदिया की प्रेरणा से नुआखाई के अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच, खेतराजपुर ने महिला शाखा 'नव चेतना' का गठन किया। मंच के प्रादेशिक सलाहकार तथा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव दिनेश अग्रवाल आयोजन के मुख्य अतिथि थे। श्रीमती गायत्री देवी ओझा इसकी संस्थापक अध्यक्षा मनोनीत की गयी, श्रीमती सपना अग्रवाल सचिव एवं श्रीमती सारिका केडिया कोषाध्यक्ष। स्वागत भाषण मंच के अध्यक्ष श्री अनिल जाजोदिया एवं धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष कमल माखरिया ने किया। नवचेना का उद्देश्य सीमित साधनों के बीच ऐसे कार्यक्रमों को हाथ में लेना है जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो तथा वे खुलकर परिवार तथा समाज के हित में प्रयास कर सकें।

अन्य संस्थायें

कोलकाता : ग्रामीणों की नेत्र ज्योति को सहेज रहा है सीकर नागरिक परिषद

8 अक्टूबर। गरीब ग्रामीणों की खोती हुए नेत्र ज्योति को वापस लाने के संकल्प में एक और कड़ी जोड़ते हुए सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) ने 1629 रोगियों को चश्मों का वितरण किया। परिषद के अध्यक्ष श्री घनश्याम शोभासरिया ने संस्था द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि अब तक 2129 मरीजों की आँखों का ऑपरेशन करवाने के साथ-साथ 7638 नेत्र रोगियों को चश्मे वितरित किए जा चुके हैं। पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में पिछले तीन महीने के दौरान कई नेत्र परीक्षण शिविर लगाए गए, जिनमें 3042 लोगों को चश्मे के योग्य तथा लगभग 864

सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) द्वारा ओसवाल भवन में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्री घनश्याम प्रसाद शोभासरिया। साथ में है श्री राम गोपाल बागला, श्री सीताराम शर्मा, उद्योगपति श्री हरिप्रसाद बुधिया, उद्योगपति श्री हरिमोहन बांगड़ तथा श्री तिलोक चंद डागा।

रोगियों की आँखों को ऑपरेशन के योग्य पाया गया। इसके अतिरिक्त 800 रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गई। श्री शोभासरिया ने बताया कि सभी 864 रोगियों को क्रमवार ऑपरेशन हेतु हावड़ा लॉयंस हॉस्पिटल में लाकर ऑपरेशन करवाया जा रहा है। अभी तक 271 रोगियों को नेत्र ज्योति प्रदान की जा चुकी है। इस अवसर पर समाज सेवा एवं उद्योग क्षेत्र से जुड़ी हस्तियों ने उपस्थित रोगियों को अपने कर-कमलों से चश्मा पहनाया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्रीमती सुनीता लोहिया व अन्य महिलाओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। परिषद के सचिव श्री दामोदर प्रसाद विदावतका ने संस्था के अन्य सेवा कार्यों का परिचय दिया। नेत्र शिविर के संयोजक श्री अनिल पोद्दार ने बंडेल, सुकांत पल्ली,बक्रेश्वर एवं देवघर में लगाए गए शिविरों की सफलता के बारे में जानकारी दी। अखिल भारत वर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि कम ही समय में परिषद ने अपने अद्‌भुत सेवा कार्यों के माध्यम से समाज में विशिष्ट स्थान बना लिया है। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियाँ एवं आडंबर की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि शादी-ब्याह के मौके पर सादगी का परिचय देकर समाज के लिए उदाहरण बना जा सकता है। इससे समाज में बेहतर संदेश जाएगा। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरिमोहन बांगड़ ने परिषद द्वारा किए गए कार्यों की गुणवत्ता पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दिखावे को कम करके समाज को बड़ी समस्या से मुक्त किया जा सकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि लोगों को संयुक्त परिवार की परंपरा को कायम रखने के लिए सोचना होगा। शिविर अध्यक्ष श्री राम गोपाल बागला ने शिविर के माध्यम से हुए अनुभवों का जिक्र करते हुए इसकी सफलता का श्रेय श्री शोभासरिया को दिया। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरि प्रसाद बुधिया ने शरीर में आँख के महत्व को बताते हुए उसे बचाकर रखने को कहा। श्री बुधिया ने इस अवसर पर परिषद के सहायतार्थ 51,000 रुपए के आर्थिक अवदान की घोषणा की। श्री तिलोक चंद डागा ने परिषद के कार्यों की सराहना की और इसकी प्रगति की कामना की। इस अवसर पर श्री विजय गुजरवासिया, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री रुगलाल सुराना, श्री दामोदर प्रसाद विदावतका सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

खरियार रोड : अग्रवाल सभा के पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न

श्री श्यामलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में श्री अग्रवाल सभा, खरियार रोड की निम्नलिखित नयी कमिटी का गठन हुआ : सर्वश्री कमल अग्रवाल-अध्यक्ष, कैलाशचन्द मरोठिया-सचिव, रामनिवास गोमाल-उपाध्यक्ष, रमेश अग्रवाल-सह सचिव, गोवर्द्धन जैन-कोषाध्यक्ष, शिवप्रसाद गुप्ता-भवन संरक्षक। सर्वश्री मांगीलाल अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल, सन्तोष अग्रवाल, बाबूलाल अग्रवाल, नरेश मित्तल, रामकिशन अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, राजू अग्रवाल कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत हुए।

कोलकाता-दुर्गोत्सव पर दर्शनार्थियों को शरबत वितरित

21 सितम्बर। श्री रामकृष्ण जन-कल्याण समिति द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति दुर्गोत्सव पर्व पर पूजा दर्शनार्थियों को हरियाणा भवन के सामने ठण्डा पवित गुलाबजल का शरबत पिलाया गया एवं छोटे बच्चों को चार हजार बिस्कुट के पैकेट एवं टाफियां वितरित की गयी। प्रधान अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अपने सारगर्भित सम्बोधन में समाज के लोगों को विभिन्न प्रकार की सेवा

सेवा कार्य शिविर को सम्बोधित करते हुए समिति के महामंत्री श्री बाबूलाल धनानिया, शिविर में उपस्थित हैं बायें से सर्वश्री श्यामसुन्दर केजरीवाल, गोविंदराम ढाणेवाल, नारायण प्रसाद माधोगढ़िया, गोपीराम बड़ोपोलिया, विश्वम्भर नेवर, अखिल भारत वर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा।

कार्यों में योगदान के लिए प्रोत्साहित किया। पत्रकार श्री विश्वम्भर नेवर ने सेवा की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कैम्प का उद्घाटन श्री नारायण प्रसाद माधोगड़िया द्वारा किया गया। इस सेवा कार्य में समिति के सर्वश्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल, भागीरथमल गोयल, विष्णुदास मित्तल, विनोद नेवटिया, ओम प्रकाश बेरिवाल, दीनानाथ धनानिया आदि अनेकों कर्मठ कार्यकर्त्ता संलग्न थे। समिति के महामंत्री श्री बाबूलाल धनानिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

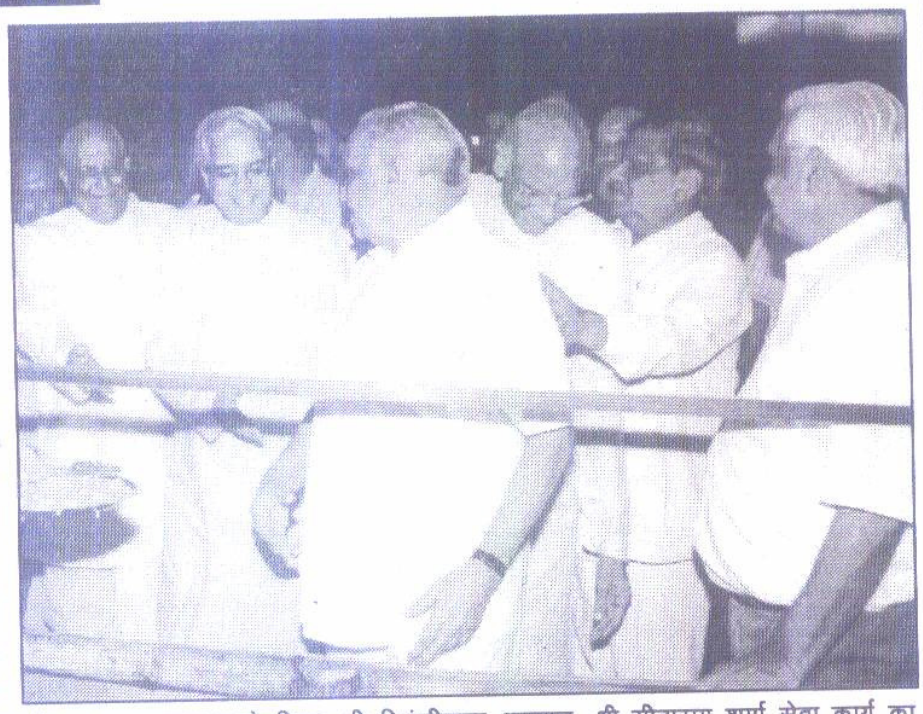

श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री सीताराम शर्मा सेवा कार्य का उद्घाटन करते हुए। श्री गोविंदराम ढाणेवाल, श्री गोपीराम बड़ोपोलिया, श्री बाबूलाल धनानिया भी परिलक्षित हैं।

कोलकाता : श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह सम्पन्न

24 सितम्बर। श्री अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा कोलकाता के विख्यात अग्रवाल नागरिक तथा जन-साधारण की उपस्थिति में श्री अग्रसेन जयन्ती मनायी गयी। महाराज श्री अग्रसेन जी की प्रतिमा को माल्यदान, अभ्यर्थना तथा सामूहिक आरती की गयी। भवन के अध्यक्ष श्री सांवलराम झुनझुनवाला ने आगत अतिथिवृन्दों एवं अग्र बन्धुओं का स्वागत किया। भवन के मंत्री श्री श्यामलाल जालान ने भवन द्वारा चलाये जा रहे सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए महाराज श्री अग्रसेन के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रधान अतिथि श्री रवि पोद्दार एवं प्रधान वक्ता श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका ने भवन द्वारा संचालित सेवा कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर साहित्यकार, शिक्षाप्रेमी एवं समाजसेवी श्री नथमल केडिया तथा श्री वासुदेव टीकमानी का समाज के प्रति स्तुत्य अवदान के लिए सार्वजनिक सम्मान किया गया। इस अवसर पर माध्यमिक, उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त छात-छात्राओं को स्वर्ण व रजत पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा अन्यान्य छात-छात्राओं को विशेष पुरस्कार एवं 'मेधावी छात्र पुरस्कार' प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन श्री श्याम सुन्दर सांगानेरिया ने तथा सभा का संचालन भवन के मंत्री श्री श्यामलाल जालान ने किया।

सम्मान/बधाई

पूर्वोत्तर में प्रथम स्थान पर उत्तम कुमार गाड़ोदिया

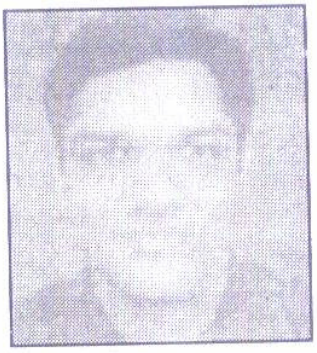

उत्तर कुमार गाड़ोदिया ने चार्टर्ड एकाउन्टेंसी की अंतिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरे भारत में छठा तथा पूर्वोत्तर में पहला स्थान प्राप्त कर पूर्वोत्तर प्रान्त का नाम रोशन किया है। उत्तम शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा अव्वल रहे हैं। इन्होंने मेट्रिक में 78 प्रतिशत, हायर सेकेंडरी में 75 प्रतिशत तथा स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। उत्तम गोलाघाट के जोधराज-ईश्वरी देवी गाड़ोदिया के पौत्र एवं तेजपुर के जाने-माने चार्टर्ड एकाउन्टेंट राम अवतार-उमा देवी गाड़ोदिया के पुत्र हैं। सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी निकिता को स्वर्ण पदक

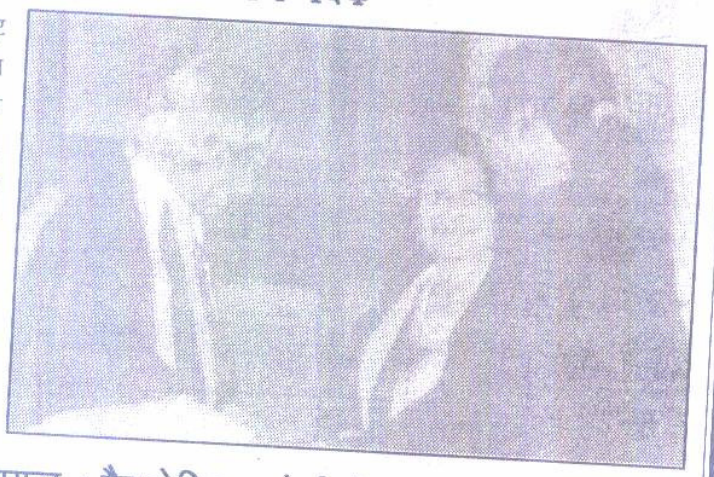

कुमारी निकिता खेतान को नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नोलॉजी, भारत सरकार द्वारा दिनांक 13.11.05 को आयोजित 12वें वार्षिक समारोह में भारत के राष्ट्रपति डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने एसेसरी डिजाइन में एक्सीलेंट इन एकेडेमिक परफोरमेन्स एण्ड कम्यूनिटी सर्विस हेतु **स्वर्ण पदक** प्रदान कर सम्मानित किया है। कुमारी निकिता तिनसुकिया के विमला-बजरंगलाल खेतान (खेतान कारपेट) की सुपुत्री है। सम्मेलन परिवार ईश्वर से आपकी उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता है।

अनगुल : पैराबेसिक कोर्स में खरी उतरी भावना राठी

एन.सी.सी. द्वारा प्रतिवर्ष आगरा छावनी के एयर फोर्स ग्राउन्ड में पूरे भारत से 20 लड़कियों को दिए जाने वाले पारा बेसिक कोर्स की 13 दिनों की कड़ी शारीरिक तथा मानसिक ट्रेनिंग में अनगुल (उड़ीसा) की 19 वर्षीय भावना राठी ने ट्रेनिंग कोर्स पूरा कर लड़ाकू विमान से 1250 फीट ऊपर से पाँच बार सफलतापूर्वक छलांग लगाकर टेस्ट पास किया।

श्रीमती मणका देवी एवं श्री मालचन्द राठी की पुत्री भावना बी.एस.सी. (कम्प्यूटर साईंस आनर्स) की आखिरी वर्ष की छात्रा है।

श्रद्धांजलि

पटना : श्री परमेश्वरलाल केजड़ीवाल का देहावसान

25 सितम्बर। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संरक्षक (वंशानुगत सदस्य) एवं समाजसेवी व राजनैतिक कार्यकर्त्ता परमेश्वरलाल केजड़ीवाल का निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, प्रान्तीय महामंत्री श्री कमल नोपानी, संयुक्त महामंत्री श्री किशोरीलाल अग्रवाल सहित अनेकों सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने श्री केजड़ीवाल के निधन पर शोक व्यक्त किया।

सम्मेलन दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना एवं उनके पविार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

कटिहार : श्री हरिप्रसाद अग्रवाल का निधन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य श्री ओम प्रकाश अग्रवाल के अनुज श्री हरिप्रसाद अग्रवाल का 25 अक्टूबर 2006 को बिहार के कटिहार जिले में एक रेल दुर्घटना में मृत्यु हो गयी।

सम्मेलन दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना एवं उनके पविार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है। ●

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06
Date of Publication - 29th October 2006
RNI Regd. No. 2868/68

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistently acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To,